ISBN: 978-93-5906-301-0

प्राथमिक शिक्षा में क्राफ्ट कार्य की प्रभावशीलता का अध्ययन



डॉ० राजीव अग्रवाल
संजय कुमार
नन्दिनी चौरसिया

प्राथमिक शिक्षा में क्राफ्ट कार्य की प्रभावशीलता का अध्ययन

डॉ० राजीव अग्रवाल

डीन– शिक्षा संकाय

बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)

संजय कुमार

एम०एस-सी० (रसायन विज्ञान), एम०एड०

नन्दिनी चौरसिया

एम०एस-सी० (वनस्पति विज्ञान), बी०एड०

प्राथमिक शिक्षा में क्राफ्ट कार्य की प्रभावशीलता का अध्ययन

डॉ० राजीव अग्रवाल

संजय कुमार

नन्दिनी चौरसिया

E-book संस्करण: 2023

मूल्य: ₹99

ISBN: 978-93-5906-301-0

प्रकाशक-

नंदिनी चौरसिया

इमलीबरा, पान मंडी

जिला- महोबा

पिन कोड- 210427 (उत्तर प्रदेश)

मो.- 7408756605

ई-मेल: nandinichaurasia210427@gmail.com

प्राक्कथन

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रुपरेखा (NCF-2005) में बच्चों के विद्यालयी जीवन को विद्यालय के बाहर के जीवन से जोड़े जाने का सुझाव दिया गया है। यह सुझाव किताबी पढ़ाई की परम्परा से मुक्ति की सलाह देता है और शिक्षण संसाधनों में समन्वय स्थापित करता है।

करके सीखना या अनुभव से सीखना शिक्षण की सर्वाधिक प्रभावी विधियों में से एक है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए केवल पुस्तकीय ज्ञान ही आवश्यक नहीं है। पुस्तकीय ज्ञान मस्तिष्क को विकसित करता है। मस्तिष्क एवं हृदय एक दूसरे से पूरक हैं। अतः मस्तिष्क एवं हृदय दोनों का संतुलित विकास शिक्षा से होना अनिवार्य हैं। हृदय अनुभूति का स्रोत है जिसके विकास के लिए हमें विद्याथियों को उनकी रुचि के अनुसार अवसर उपलब्ध कराना आवश्यक है जिससे उनके अंतस में छिपी प्रतिभा को अभिव्यक्ति मिल सके। अतः पाठयक्रम में मनोरंजनात्मक, कलात्मक एवं रुचिपूर्ण क्राफ्ट कार्य से सम्बन्धित क्रियाकलापों का समावेशन आवश्यक है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक '**प्राथमिक शिक्षा में क्राफ्ट कार्य की प्रभावशीलता का अध्ययन है**'। इस पुस्तक को 6 अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय का शीर्षक अध्ययन परिचय है, जिसके अन्तर्गत प्राथमिक शिक्षा का विकास, प्राथमिक शिक्षा का स्वरुप, प्राथमिक शिक्षा की समस्याएँ, क्राफ्ट कार्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, क्राफ्ट कार्य के आधार प्राथमिक शिक्षा में क्राफ्ट कार्य, अध्ययन के उद्देश्य, अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में सम्बन्धित सहित्य का सर्वेक्षण किया गया है, जिसके अन्तर्गत क्राफ्ट कार्य से सम्बन्धित कतिपय शोध कार्य की समीक्षा एवं निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय शोध अध्ययन की प्रक्रिया से सम्बन्धित है, जिसके अन्तर्गत शोध विधि, अध्ययन समष्टि, न्यादर्श चयन विधि एवं प्रयोगों का प्रशासन के बारे में सविस्तार चर्चा की गयी है।

चतुर्थ अध्याय चयनित क्राफ्ट कार्य के प्रयोग से सम्बन्धित है, जिसमें बारह क्राफ्ट वस्तुओं के निर्माण के विषय में विस्तारपूर्वक समझाया गया है। पञ्चम अध्याय में पाठ्यक्रम में क्राफ्ट कार्य का स्थान, क्राफ्ट कार्य का प्राथमिक शिक्षा में क्रियान्वयन, विद्यालय में क्राफ्ट का मूल्यांकन का वर्णन किया गया है।

षष्ठ अध्याय में निष्कर्ष, अध्ययन के सुझाव, शैक्षिक उपादेयता एवं भावी शोध हेतु सुझाव प्रस्तुत किये गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध-प्रबन्ध पर आधारित है। प्रत्येक शोध कार्य उद्देश्यपरक होता है और यह उद्देश्य तभी सार्थक हो सकता है जब शोध कार्य के परिणामों का उचित क्रियान्वयन किया जाये। इस कार्य के लिए शोध कार्य को जनमानस के लिए सुलभ बनाने की नितांत आवश्यकता होती है। एक पुस्तक के रूप में शोध कार्य को प्रकाशित करने से यह कार्य सुगमता से पूर्ण हो सकता है। शोध कार्य के पुस्तक के रूप में प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान में वृद्धि होती है तथा अन्य बुद्धिजीवियों को अनेक क्षेत्रों में नवीन अनुसन्धान करने की प्रेरणा भी प्राप्त होती है। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक निश्चित ही प्राथमिक शिक्षकगणों एवं विद्यार्थियों को क्राफ्ट कार्य के प्राथमिक शिक्षा मे महत्त्व को स्पस्ट करने में सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में संदर्भ ग्रन्थ सूची मैं उल्लिखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो, हम अत्यंत आभारी रहेंगे।

डॉ० राजीव अग्रवाल

संजय कुमार

नंदिनी चौरसिया

विषय सूची

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
	1.11 समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण	32
	1.11.1 प्राथमिक शिक्षा	32-33
	1.11.2 क्राफ्ट कार्य	33
	1.11.3 प्रभावशीलता	33
	1.12 अध्ययन उद्देश	33-34
	1.13 अध्ययन का परिसीमांकन	34
	1.14 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता	35
द्वितीय अध्याय	**सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण**	**36-46**
	2.1 प्रस्तावना	36-39
	2.2 क्राफ्ट कार्य से सम्बन्धित कतिपय शोध कार्य	39-45
	2.3 क्राफ्ट कार्य से सम्बन्धित पुस्तकें, लेख, समाचार इत्यादि	45-46
	2.4 निष्कर्ष	46

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1 शिक्षा विकास की प्रक्रिया

शिक्षा ज्ञान, उचित आचरण, तकनीकी दक्षता, विद्या आदि को प्राप्त करने की प्रक्रिया को कहते हैं। शिक्षा कौशलों (skills), मानसिक, नैतिक और सौन्दर्य विषयक के उत्कर्ष पर केन्द्रित है। शिक्षा, समाज की एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तान्तरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज की सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखती है। बच्चा शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों, व्यवस्थाओं, समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है। बच्चा समाज से तभी जुड़ पाता है जब वह उस समाज विशेष के इतिहास से अभिमुख होता है।

शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्त्व का विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है।

समाजशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों व नीतिकारों ने शिक्षा के सम्बन्ध में अपने विचार दिए हैं। शिक्षा के अर्थ को समझने में ये विचार भी हमारी सहायता करते हैं। शिक्षा के सम्बन्ध में विभिन्न शिक्षाविदों के विचार इस प्रकार हैं–

- **महात्मा गांधी–** "शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।"
- **स्वामी विवेकानंद–** "मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।"
- **तथागत बुद्ध–** "शिक्षा व्यक्ति के समन्वित विकास की प्रक्रिया है।"
- "Education makes a people easy to lead, but difficult to drive; easy to govern, but impossible to enslave" – ***Lord Henry Brougham***
- "Education is what survives when what has been learnt has been forgotten"– ***B.F. Skinner***

शिक्षा के अति महत्वपूर्ण पहलुओं में से व्यावसायिक कुशलता एवं कौशलात्मक निपुणता एक है। अन्य विभिन्न परिणामों के साथ-साथ सर्वप्रथम गाँधी जी ने व्यावसायिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने वाली शिक्षा की संकल्पना की उन्होंने बेसिक शिक्षा का एक नया विचार प्रदान किया जो आत्मबल प्रदान करने वाला एक सबल माध्यम था। शिक्षा के सम्बन्ध में उनके विचार मौलिक थे। उन्होंने अपने शिक्षा सम्बन्धी विचार **हरिजन पत्रिका** में प्रकाशित करना प्रारम्भ किया आगे चलकर यही विचार बेसिक शिक्षा योजना का आधार बने। 18 फरवरी सन 1939 में हरिजन पत्रिका में उन्होंने कहा हमारी शिक्षा को क्रन्तिकारी हो जाना चाहिए। मस्तिष्क को हाथ के द्वारा शिक्षित करना आवश्यक है यदि मैं कवि होता तो पांच अंगुलिओं की संभावनाओं पर कविता लिखता। आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि दिमाग ही सब कुछ है हाथ एवं पैर कुछ नहीं। वह व्यक्ति जो अपने हाथों को

प्रशिक्षित नहीं करते हैं वह शिक्षा के अति साधारण मार्ग पर चलते हैं, जिस प्रकार बिना संगीत के जीवन। पुस्तकीय ज्ञान ही बच्चों के सम्पूर्ण ज्ञान आकर्षित करने में पर्याप्त नहीं है। शब्दों की शिक्षा थकान को बढ़ाती है तथा बच्चों के मस्तिष्क की क्रियाशीलता को कम करती है। यदि शिक्षा सही एवं गलत के बीच अन्तर करना नहीं सिखाती तथा एक को ग्रहण करना दूसरे को त्यागना नहीं सिखाती, तो वह मिथ्या है।

शिक्षा (Education) का शाब्दिक अर्थ विद्यार्थिओं की आंतरिक क्षमताओं को उजागर करना है परन्तु पुस्तकीय ज्ञान अधिकांशतः वाह्य ज्ञान है, जिसकी प्रवृत्ति वाह्य से आंतरिक होती है। यह विद्यार्थिओं की अभिक्षमताओं को पूर्णतः अभिव्यक्ति नहीं देती। अतः आवश्यकता है शैक्षिक पाठयक्रम में नवीन क्रियाकलापों की समावेश की, जिससे विद्यार्थीयों का सर्वांगीण विकास हो सके। समय-समय पर विभिन्न समितिओं एवं आयोगों ने शिक्षा के स्वरुप में सुधार कर उसे सुदृढ़ बनाने की कोशिश की है। बेसिक शिक्षा (1937 ई.), कोठारी कमीशन (1966 ई.) राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986 ई.) ने कार्य प्रधान शिक्षा का समर्थन किया। ये कार्य केवल हाथ से किया गया कार्य नहीं, बल्कि विद्यार्थिओं के आंतरिक गुणों का उजागर करने वाला होने चाहिए। ये कार्य कलात्मकता, रचनात्मक, नृत्य, संगीत, खेल ऐसी विभिन्न क्रियाओं में हो सकते हैं।

अतः शिक्षा केवल ज्ञान प्रधान ही नहीं होनी चाहिए बल्कि उसमें व्यावहारिक उपयोगिता भी होनी चाहिए। विद्यार्थी जीवन में ही उनमें कार्य के प्रति सम्मान की भावना का विकास होना आवश्यक है तथा इस विकास की नींव रखने की जिम्मेदारी परिवार, विद्यालय एवं समुदाय सभी की है। तभी प्रत्येक विद्यार्थी भारत का आदर्श नागरिक होगा।

शिक्षा एक विकास की प्रक्रिया है। जॉन लॉक के अनुसार “जन्म के समय बालक का मन (मष्तिष्क) कोरी पट्टी के समान होता है”। जैसे-जैसे बालक बड़ा होता है; वह सीखने

लगता है। उसे माँ से, परिवार से, समाज से, विद्यालय से शिक्षा प्राप्त होती है। शिक्षा के द्वारा उसे सही-गलत का ज्ञान होता जाता है और उसका विकास होता है। शिक्षा के कारण ही बालक के आन्तरिक शक्तियों और गुणों का विकास होता है। शिक्षा के अभाव में यह सब सम्भव नही है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव की अंतर्निहित शक्तियों का दिग्दर्शन होता है । इस प्रकार शिक्षा विकास की प्रक्रिया है। वातावरण एवं पर्यावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने में शिक्षा की महती भूमिका होती है, ••••••••• अवस्था में बालक की सीखने की गति प्रायः कम होती है। धीरे-धीरे जब बच्चा बड़ा होता है तो वह वातावरण से कुछ नए अनुभव अर्जित करता है और उसके फलस्वरूप उसका व्यवहार परिवार एवं समाज तथा समुदाय के अनुकूल हो जाता है। बालक के अनुभव का यह क्रम दिन-प्रतिदिन बढ़ता है। जिसके परिणाम स्वरुप उसका व्यवहार संयमित होने लगता है,शिक्षा के द्वारा ही एक असभ्य, अविकसित, अपरिपक्व मानव, सुसभ्य एवं सुविकसित इंसान के रूप में परिवर्तित हो जाता है। शिक्षा केवल मानव जाति के व्यवहार में परिवर्तन लाने तक ही सीमित नहीं है अपितु उनका चारित्रिक विकास भी करती है। संसार के अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य पर शिक्षा का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक होता है क्योकि मनुष्य एक विवेकशील एवं बुद्धिमान प्राणी है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य के पशुवत व्यवहार में परिवर्तन **करके** उसे एक सामाजिक प्राणी बनाया जाता है। सामाजिक प्राणी बनाने की प्रक्रिया में परिवार, विद्यालय, समाज और समुदाय बालक की सहायता करते है। बालक की शिक्षा के विकास में प्राथमिक, माध्यमिक, तथा उच्च स्तर के अलग-अलग कार्यक्रम निर्धारित किए जाते हैं जिससे बालक के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य की प्राप्ति आसानी से की जा सके। बालक की शिक्षा में उच्च शिक्षा अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है। उच्च शिक्षा स्तर पर ही बालक की शैक्षिक व्यावसायिक एवं सामाजिक परिपक्वता की प्राप्ति होती है जो उसके आगे आने वाले भविष्य की दिशा निर्धारित करती है। समाज की आर्थिक व्यवस्था

चार प्रकार की श्रेणियों में विभक्त रही है। ब्राम्हण वर्ग से अपेक्षा की जाती थी कि वह समुदाय को पुरोहित, चिन्तक, लेखक, विद्यालय, धार्मिक नेता तथा पथ प्रदर्शक देगें। क्षत्रिय वर्ण समाज को योद्धा शासक प्रशासक, वैश्य समाज को उत्पादक, कृषक, शिल्पकार व्यापारी देते थे। शूद्र छोटे-छोटे कार्यों के लिए भृत्यों या नौकरी की आपूर्ति करते थे। इस प्रकार की प्रणाली में धर्म चिंतन तथा विद्या को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया। सामजिक व्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं, अपितु व्यक्ति की क्षमता व आंतरिक व्यवस्था के आधार पर निर्धारित की गयी। वर्णों के आधार पर तदानुरूप चार पुरुषार्थ स्थापित किए जो उस समय की दार्शनिक सोच के घोतक है, ब्राम्हण मोक्ष, क्षत्रिय-काम, वैश्य-अर्थ, शुद्र-धर्म। कालांतर में यही वर्ष व्यवस्था जाति व्यवस्था में परिणत हुई तथा जातीय संघर्ष का जन्म हुआ। जो आज के सूचना तकनीकी युग में भी यह संघर्ष उच्च स्तर पर विद्यमान है, चाहे वह राजनीति में हो, शिक्षा में हो या शासन में हो, यह राष्ट्र निर्माण में बाधा स्वरूप है। इस सामजिक विघटन को दूर करने के लिए समाज में ऐसी शिक्षा का होना नितांत आवश्यक है जो हमे संकीर्ण सोच से ऊपर उठाकर वैश्विक स्तर तक पहुंचा सके, और इस प्रायोगिक युग में सकारात्मक सोच का विकास कर सके। वर्तमान समय में उच्च शिक्षा की जो स्थिति है उसमे कुशल शिक्षक के साथ वर्तमान तकनीकी भी महत्वपूर्ण भूमिका में होती है, क्योकि उच्च शिक्षा के सन्दर्भ में भारत की स्थिति अभी निराशाजनक है।

1.2 प्राथमिक शिक्षा: ज्ञान की आधारशिला

प्राथमिक शिक्षा ऐसा आधार है, जिस पर देश तथा प्रत्येक नागरिक का विकास निर्भर करता है। हाल के वर्षों में भारत ने प्राथमिक शिक्षा में नामांकन, छात्रों की संख्या बरकरार रखने, उनकी नियमित उपस्थिति दर और साक्षरता के प्रसार के संदर्भ में काफी प्रगति की है। देश के संसद ने वर्ष 2009 में शिक्षा का अधिकार अधिनियम पारित किया

था, जिसके द्वारा 6 से 14 साल के सभी बच्चों के लिए शिक्षा एक मौलिक अधिकार हो गई थी। हालांकि देश में अभी भी आधारभूत शिक्षा को सार्वभौम नहीं बनाया जा सका है। इसका अर्थ है बच्चों का स्कूलों में सौ फीसदी नामांकन और स्कूलिंग सुविधाओं से लैस हर घर में उनकी संख्या को बरकरार रखना। इसी कमी को पूरा करने हेतु सरकार ने वर्ष 2001 में सर्व शिक्षा अभियान योजना की शुरुआत की थी, जो अपनी तरह की दुनिया में सबसे बड़ी योजना थी। सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी शिक्षा क्षेत्र में वंचित और संपन्न समुदायों, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में, के बीच की दूरी पाटने का कार्य कर रहा है। भारत विकास प्रवेशद्वार ने प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में भारत में मौलिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण हेतु प्रचुर सामग्रियों को उपलब्ध कराकर छात्रों तथा शिक्षकों की क्षमता बढ़ाने की पहल की है। **बालकों के लिए** बाल अधिकार आज के समय की सबसे बड़ी और उभरती हुई जरुरत है, जिसके बारे में लोगों में जानकारी का अभाव है। इस भाग में ऐसे कई बाल अधिकारों पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रण का उद्देश्य बच्चों के बाल अधिकारों का हनन होने से रोकना और उनके अधिकार सुरक्षित करना है। इसे 86 वें संविधान संशोधन अधिनियम के अनुच्छेद 21 ए जोड़ा गया और इसे कार्यान्वित करने के लिए सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयासों की जानकारी इस भाग में दी गई है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति की मनोवृत्ति, मूल्यों, ज्ञान तथा कौशल में अभिवृत्ति की जा सकती है। देश के नागरिकों का विकास शिक्षा पर ही आधारित होता है। अतः प्रत्येक समाज अपने नागरिकों के लिए शिक्षा की श्रेष्ठतम व्यवस्था करता है। शिक्षा की व्यवस्था की सफलता तथा असफलता उससे सम्बंधित आयोजकों, शिक्षकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों इत्यादि पर आश्रित रहती है। शिक्षा नीति चाहे कितनी भी अच्छी क्यूँ न हो लेकिन यदि इस प्रक्रिया से सम्बंधित प्रत्येक व्यक्ति को अपने-अपने दायित्वों का बोध नहीं

होगा तथा नीतियों के प्रति प्रतिबद्धता नहीं होगी तो नीति की सफलता संदेहास्पद रहेगी। भारतवर्ष सदैव से ही धर्म एवं संस्कृति का अग्रदूत रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत के शैक्षिक परिदृश्य में बहुत तीव्र गति से परिवर्तन हुए हैं। आज शिक्षा का स्वरूप काफी कुछ बदल गया है। अब शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक ही सीमित नहीं रह गया है, बल्कि शिक्षा राष्ट्रीय विकास का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुकी है, जिसका सर्वप्रमुख कार्य मानवीय संसाधनों को विकसित करना है। इस प्रक्रिया में प्राथमिक शिक्षा मानवीय संसाधनों को उचित ढंग से विकसित करने के लिए आधार स्तंभ का कार्य करती है।

प्राथमिक शिक्षा के धीमी प्रगति के अनेक कारण हो सकते हैं, जिन्हें प्रशासनिक, सामाजिक तथा नैतिक कार्य को के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। इन सभी कार्यों से संबंधित सर्वमान्य बात प्राथमिक शिक्षा में जवाबदेही की है। वर्तमान में अनेक नीतियों योजनाओं के होते हुए भी प्राथमिक शिक्षा के स्तर में गिरावट देखी जा सकती है। जिसका कारण शिक्षा से संबंधित विभिन्न व्यक्तियों जैसे कि- प्रशासकों, प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों, विद्यार्थियों तथा अभिभावकों में कर्तव्य बोध का अभाव दिखाई पड़ता है, अर्थात वे अपने निर्दिष्ट कार्यों को इतनी मेहनत एवं लगन के साथ करते हुए नहीं पाए जा रहे हैं जितनी की उनसे अपेक्षा की जाती है। जहां एक ओर प्रशासक, प्रशासनिक कार्यों के प्रति उदासीन हैं वहीं दूसरी ओर अभिभावक अपने पाल्यों की शिक्षा में रुचि नहीं ले रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक उत्तरदायित्व की भावना आवश्यक प्रतीत होती है तथा शिक्षकों से आशा की जाती है कि शिक्षण संस्थाओं में अपने कर्तव्यों का निर्वहन ढंग से करें तथा कल्पनाशील एवं नवाचारी शिक्षण विधियों, रचना कौशलों, युक्तियों, प्रविधियों, इत्यादि के माध्यम से सृजनशील नागरिकों का निर्माण करें जिससे कि प्राथमिक शिक्षा अपने वांछनीय लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें।

1.3 भारत में प्राथमिक शिक्षा का विकास

ब्रिटिश काल में ईस्ट इंडिया कंपनी से लेकर ब्रिटिश शासन तक सभी के काल में भारत में शिक्षा पद्धति ने नवीन दिशा ग्रहण की। इसाई धर्म के प्रचार के लिए आई हुई मिशनरियों के द्वारा ईसाई धर्म के प्रचारक भारत में शिक्षा का प्रसार करना चाहते थे। 1813 में आज्ञा पत्र के अनुसार भारत वासियों को शिक्षा का प्रावधान किया गया। 1835 में लॉर्ड मैकाले ने नई शिक्षा नीति की घोषणा की तथा शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा को रखा तथा उसका यह मानना था कि अंग्रेजी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने से भारत में जो पीढ़ी पैदा होगी वह कुछ समय बाद रंग, नस्ल, खून व राष्ट्रीयता से तो भारतीय होगी परंतु विचारों स्वामी भक्ति में अंग्रेज होंगे। समाज के एक बहुत बड़े भाग को इससे वंचित कर दिया गया था, पर कालांतर में जनतांत्रिक प्रवृत्तियों के विस्तार और ज्ञान के विस्फोट में शिक्षा का अप्रत्याशित विस्तार किया और आज यह सभी की आवश्यकता के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी है। आज यह स्वीकार कर लिया गया है कि समाज के सभी लोगों को शिक्षा उपलब्ध होनी चाहिए। अंग्रेजी शासन के फलस्वरूप पाश्चात शिक्षा का प्रचार-प्रसार, पुनर्जागरण आंदोलन और समाज सुधार आंदोलनों के फलस्वरुप भारतीय समाज में जो जनचेतना उभर कर सामने आई उससे आधुनिक शिक्षा की महत्वता प्रतिष्ठित हुई और शिक्षा विशिष्ट वर्गों की परिधि में से निकल कर पूरे समाज को अपनी आगोश में लेने के लिए अग्रसर हो उठी। पर हम यह भी देखते हैं कि आजादी के छ: दशक से भी अधिक व्यतीत हो जाने के बाद भी शिक्षा के क्षेत्र में वांछित सफलता नहीं मिल सकी है।

मानव की शिक्षा उसी समय प्रारम्भ हो जाती है, जब वह अबोध शिशु के रूप में सर्वप्रथम आँखें खोलता है और अपने चारों तरफ के वातावरण से सुपरिचित होता है। प्रत्येक समाज और देश अपने लिए उचित शिक्षा की व्यवस्था करता है और निरंतर

वैज्ञानिक त्रुटिरहित विधियों का प्रयोग कर शिक्षा के क्षेत्र में नई मान्यता और आदर्श प्रस्तुत कर समाज का अधिकतम कल्याण सुनिश्चित करता है।

वास्तव में शिक्षा मानव समाज की नैसर्गिक आवश्यकता है, जिसके अभाव में बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास सम्भव नही है। इस प्रकार शिक्षा किसी भी व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के जनता की बुनियादी आवश्यकता है और उसमे भी प्राथमिक शिक्षा बालक के भावी शिक्षा एवम जीवन की आधार शिला होती है। प्रत्येक राष्ट्र के लिए प्राथमिक शिक्षा, प्रथम प्राथमिकता की वस्तु होती है।

अतः भारत में **प्राथमिक शिक्षा के विकास क्रम** को समझने के लिए 3 चरणों मे क्रमबद्ध अध्ययन इस लेख में माध्यम से किया जाएगा, जो निम्नलिखित है–

a. प्राचीन काल में प्राथमिक शिक्षा।

b. मध्य काल में प्राथमिक शिक्षा।

c. आधुनिक भारत में प्राथमिक शिक्षा।

1.3.1 प्राचीन काल में प्राथमिक शिक्षा

भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति में हमें अनौपचारिक तथा औपचारिक दोनों प्रकार के शैक्षणिक केन्द्रों का उल्लेख प्राप्त होता है। औपचारिक शिक्षा मन्दिर, आश्रमों और गुरुकुलों के माध्यम से दी जाती थी। ये ही उच्च शिक्षा के केन्द्र भी थे। जबकि परिवार, पुरोहित, पण्डित, सन्यासी और त्यौहार प्रसंग आदि के माध्यम से अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त होती थी। विभिन्न धर्मसूत्रों में इस बात का उल्लेख है कि माता ही बच्चे की श्रेष्ठ गुरु है। कुछ विद्वानों ने पिता को बच्चे के शिक्षक के रुप में स्वीकार किया है। जैसे-जैसे सामाजिक विकास हुआ वैसे-वैसे शैक्षणिक संस्थाएँ स्थापित होने लगी। वैदिक काल में परिषद, शाखा

और चरण जैसे संघों का स्थापन हो गया था, लेकिन व्यवस्थित शिक्षण संस्थाएँ सार्वजनिक स्तर पर बौद्धों द्वारा प्रारम्भ की गई थी।

गुरुकुलों की स्थापना प्रायः वनों, उपवनों तथा ग्रामों या नगरों में की जाती थी। वनों में गुरुकुल बहुत कम होते थे। अधिकतर दार्शनिक आचार्य निर्जन वनों में निवास, अध्ययन तथा चिन्तन पसन्द करते थे। वाल्मीकि, सन्दीपनि, कण्व आदि ऋषियों के आश्रम वनों में ही स्थित थे और इनके यहाँ दर्शन शास्त्रों के साथ-साथ व्याकरण, ज्योतिष तथा नागरिक शास्त्र भी पढ़ाये जाते थे। अधिकांश गुरुकुल गांवों या नगरों के समीप किसी बाग अथवा वाटिका में बनाये जाते थे। जिससे उन्हें एकान्त एवं पवित्र वातावरण प्राप्त हो सके। इससे दो लाभ थे; एक तो गृहस्थ आचार्यों को सामग्री एकत्रित करने में सुविधा थी, दूसरे ब्रह्मचारियों को भिक्षाटन में अधिक भटकना नहीं पड़ता था। मनु के अनुसार `ब्रह्मचारों को गुरु के कुल में, अपनी जाति वालों में तथा कुल बान्धवों के यहाँ से भिक्षा याचना नहीं करनी चाहिए, यदि भिक्षा योग्य दूसरा घर नहीं मिले, तो पूर्व गृहों का त्याग करके भिक्षा याचना करनी चाहिये। इससे स्पष्ट होता है कि गुरुकुल गांवों के सन्निकट ही होते थे। स्वजातियों से भिक्षा याचना करने में उनके पक्षपात तथा ब्रह्मचारी के गृह की ओर आकर्षण का भय भी रहता था अतएव स्वजातियों से भिक्षा-याचना का पूर्ण निषेध कर दिया गया था। बहुधा राजा तथा सामन्तों का प्रोत्साहन पाकर विद्वान् पण्डित उनकी सभाओं की ओर आकर्षित होते थे और अधिकतर उनकी राजधानी में ही बस जाते थे, जिससे वे नगर शिक्षा के केन्द्र बन जाते थे।

इनमें तक्षशिला, पाटलिपुत्र, कान्यकुब्ज, मिथिला, धारा, तंजोर आदि प्रसिद्ध हैं। इसी प्रकार तीर्थ स्थानों की ओर भी विद्वान् आकृष्ट होते थे।

फलत: काशी, कर्नाटक, नासिक आदि शिक्षा के प्रसिद्ध केन्द्र बन गये। कभी-कभी राजा भी अनेक विद्वानों को आमंत्रित करके दान में भूमि आदि देकर तथा जीविका निश्चित करके उन्हें बसा लेते थे। उनके बसने से वहाँ एक नया गाँव बन जाता था। इन गाँवों को `अग्रहार' कहते थे। इसके अतिरिक्त विभिन्न हिन्दू सम्प्रदायों एवं मठों के आचार्यों के प्रभाव से ईसा की दूसरी शताब्दी के लगभग मठ शिक्षा के महत्त्वपूर्ण केन्द्र बन गये। इनमें शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य आदि के मठ प्रसिद्ध हैं। सार्वजनिक शिक्षण संस्थाएँ सर्वप्रथम बौद्ध विहारों में स्थापित हुई थीं।

भगवान बुद्ध ने उपासकों की शिक्षा-दीक्षा पर अत्यधिक बल दिया। इस संस्थाओं में धार्मिक ग्रन्थों का अध्यापन एवं आध्यात्मिक अभ्यास कराया जाता था। अशोक (300 ई.पू.) ने बौद्ध विहारों की विशेष उन्नति करायी। कुछ समय पश्चात् ये विद्या के महान केन्द्र बन गये। ये वस्तुत: गुरुकुलों के ही समान थे। किन्तु इनमें गुरु किसी एक कुल का प्रतिनिधि न होकर सारे विहार का ही प्रधान होता था। ये धर्म प्रचार की दृष्टि से जनसाधारण के लिए भी सुलभ थे। इनमें नालन्दा विश्वविद्यालय (450 ई.), वल्लभी (700 ई.), विक्रमशिला (800 ई.) प्रमुख शिक्षण संस्थाएँ थीं। इन संस्थाओं का अनुसरण करके हिन्दुओं ने भी मन्दिरों में विद्यालय खोले जो आगे चल कर मठों के रूप में परिवर्तित हो गये।

1.3.2 मध्यकाल में प्राथमिक शिक्षा

मध्यकाल में प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था इस प्रकार की गई थी–

शिक्षण संस्थाएँ– मध्यकाल में प्राथमिक शिक्षा मकतबों में प्रदान की जाती थी। मकतबों की स्थापना व्यक्तिगत एवं राज्य दोनों ओर से की जाती थी। मकतब शब्द का

आशय उस स्थान से है जहाँ लिखना सिखाया जाता है। मकतबों में शिक्षार्थियों को कुरान पढ़ाई जाती थी। प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए कुरान की आयतों को कंठस्थ करना आवश्यक था क्योंकि नमाज पढ़ते समय आयतों की आवश्यकता होती है। मकतबों के अतिरिक्त दरगाहों एवं खानकाहों में भी प्राथमिक शिक्षा प्रदान की जाती थी।

प्रवेश सम्बन्धी नियम– जिस प्रकार वैदिक काल की शिक्षा उपनयन संस्कार के पश्चात ही शिक्षा का शुभारम्भ होती थी, उसी प्रकार मध्ययुगीन शिक्षा का **'बिस्मिल्लाह रवानी'** संस्कार के पश्चात ही शिक्षा का शुभारम्भ होता था। यह संस्कार 4-वर्ष, 4-माह, 4-दिन, की आयु के प्रत्येक बालक का किया जाता था। इस दिन बालक को नहलाकर नवीन वस्त्र पहनाये जाते थे, तदोपरान्त वर्णमाला, कुरान की भूमिका और उसका 55 व 87 वाँ अध्याय बालक के समक्ष रखा जाता था। मौलवी कुरान की आयतों को पढ़ता था और बालक उसको दोहराता था। जो बालक आयतें नहीं कह पाते थे, उन्हें बिस्मिल्लाह कहकर ही विद्या आरम्भ करायी जाती थी।

पाठ्यक्रम– मकतबों में सर्वप्रथम शिक्षार्थियों को वर्णमाला के अक्षरों का ज्ञान प्रदान किया जाता था तथा कुरान की कुछ आयतों को रटवाया जाता था। मकतबों के पाठ्यक्रम के अन्तर्गत पढ़ने, लिखने एवं अंकगणित के प्रश्नों को निकालने की शिक्षा समाविष्ट थी। प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में शुद्ध उच्चारण पर विशेष बल दिया जाता था। अध्यापक शिक्षार्थियों को सामूहिक रूप से उच्चारण अभ्यास कराते थे। इसके अतिरिक्त शिक्षार्थियों को फारसी भाषा एवं व्याकरण का ज्ञान भी प्रदान किया जाता था। शिक्षार्थियों में नैतिकता का विकास करने हेतु शेख-शादी की पुस्तकें गुलिस्ताँ और बोस्ता भी पढ़ाई जाती थी। इसके अतिरिक्त पैगंबरों की कथाएँ, मुस्लिम फकीरों की कहानियाँ तथा फारसी कवियों की कविताएँ भी शिक्षार्थियों को पढ़ाई जाती थी और सुन्दर लेख, पत्र-लेखन आदि की शिक्षा शिक्षार्थियों को प्रदान की जाती थी।

1.3.3 आधुनिक काल में प्राथमिक शिक्षा

भारत में जो प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप हमें प्राप्त होता है वह ब्रिटिश काल की देन है। 1510 में ही पुर्तगाली व्यापारियों ने गोवा, कोचीन इत्यादि में प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना की, परन्तु ब्रिटिश ईसाईयों और अंग्रेजी सरकार ने इस क्षेत्र में सराहनीय तथा स्थानीय प्रयास किया। 1857 में स्वतंत्रता के लिए प्रथम क्रान्ति हुई, जिसके कारण 1858 में सीधे भारत में ब्रिटेन की महारानी का शासन हो गया। 1857 में सरकार ने प्राथमिक शिक्षा प्रारम्भ की तथा 1882 में भारतीय शिक्षा आयोग (हण्टर आयोग) की नियुक्ति की गई, जिसके सुझावों के आधार पर प्राथमिक शिक्षा का भार स्थानीय निकायों को सौंप दिया गया, जिसके पश्चात प्राथमिक शिक्षा का विकास हुआ। भारत में आधुनिक शिक्षा की नीव यूरोपीय ईसाई धर्मप्रचारक तथा व्यापारियों के हाथों से डाली गई। उन्होंने कई विद्यालय स्थापित किए।

प्रारंभ में मद्रास ही उनका कार्यक्षेत्र रहा धीरे-धीरे कार्यक्षेत्र का विस्तार बंगाल में भी होने लगा। इन विद्यालयों में ईसाई धर्म की शिक्षा के साथ-साथ इतिहास, भूगोल, व्याकरण, गणित, साहित्य आदि विषय भी पढ़ाए जाते थे। रविवार को विद्यालय बंद रहता था। अनेक शिक्षक छात्रों की पढ़ाई अनेक श्रेणियों में कराते थे। अध्यापन का समय नियत था। साल भर में छोटी-बड़ी अनेक छुट्टियां हुआ करती थी। प्रायः 150 वर्षों के बीतने बीतते व्यापारी ईस्ट इंडिया कंपनी राज्य करने लगी। विस्तार में बाधा पड़ने के डर से कंपनी शिक्षा के विषय में उदासीन रही। फिर भी विशेष कारण और उद्देश्य से 1780 में कोलकाता में “कोलकाता मदरसा” और 1791 में बनारस में “संस्कृत कालेज” कंपनी द्वारा स्थापित किए गए। धर्म प्रचार के विषय में भी कंपनी की पूर्व नीति बदलने लगी। कंपनी

अब अपने राज्य के भारतीयों को शिक्षा देने की आवश्यकता को समझने लगी, 1813 के आज्ञा के अनुसार शिक्षा में धन व्यय करने का निश्चय किया गया किस प्रकार की शिक्षा दी जाए इस पर प्राच्य और पाश्चात्य शिक्षा के समर्थकों में मतभेद रहा। वाद विवाद चलता रहा। अंत में "लॉर्ड मैकाले" के तर्क वितर्क और "राजा राममोहन राय" के समर्थन से प्रभावित होकर 1835 ईस्वी लॉर्ड बेंटिक ने निश्चय किया कि अंग्रेजी भाषा और साहित्य और यूरोपीय इतिहास विज्ञान इत्यादि की पढ़ाई हो और इसी में 1813 का आज्ञापत्र में अनुमोदित धन का व्यय हो। प्राच्य शिक्षा चलती चले परंतु अंग्रेजी और पश्चिमी विषयों के अध्ययन और अध्यापन पर जोर दिया जाए।

1.4 प्राथमिक शिक्षा का वर्तमान स्वरूप

वर्तमान में प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में अधिक से अधिक स्कूलों में दाखिला लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या बढ़ाने की बजाए इस बात पर अधिक बल दिया जा रहा है कि विद्यार्थी अपनी शिक्षा जारी रखें और कुछ सीखें। सब को प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने के कार्यक्रम के तीसरे पहलू के रूप में न्यूनतम अधिगम स्तर पर कार्यक्रम चलाया जा रहा है। जिसके तहत इस बात का ध्यान रखा जा रहा है कि कार्यक्रम के शैक्षिक स्तर में सुधार कर एक पैकेज निर्धारित किया गया है, जिसके अंतर्गत देश में विभिन्न शैक्षिक स्तर के सभी बच्चों के लिए शिक्षा का एक निश्चित लक्ष्य तय कर दिया गया है।

देश की प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता में कमी की एक प्रमुख वजह यह भी है कि इसकी जिम्मेदारी पुर्णतः राज्य सरकारों पर ही छोड़ दी गई है। यही कारण है कि आज देश के तमाम राज्यों में वही पुराने 1986 के धरने पर शिक्षा व्यवस्था को संचालित किया जा रहा है। आजादी के 68 साल बीत जाने के बाद भी सरकारी नियंत्रण वाले

प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में न तो शिक्षा का स्तर सुधर पा रहा है और न ही इनमें विद्यार्थियों को बुनियादी सुबिधाएँ मिल पा रही हैं। जाहिर है कि प्राथमिक स्कूलों में शिक्षा के सुधार के लिए जब तक कोई बड़ा कदम नहीं उठाया जाता, तब तक हालात नहीं बदलेंगे। निम्न मध्यवर्ग और आर्थिक रूप से सामान्य स्थिति वाले लोगों के बच्चों के लिए सरकारी स्कूल ही बचते हैं। देश की एक बड़ी आबादी सरकारी स्कूलों के ही आसरे है। फिर भी वे चाहे कैसे हो। इन स्कूलों में न तो योग्य अध्यापक हैं और न ही मूलभूत सुबिधाएँ। इन स्कूलों में पढ़ाई लिखाई की असलियत स्वयंसेवी संगठन प्रथम की हर साल आने वाली रिपोर्ट बताती है।

1.4.1 परिषदीय विद्यालय



बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित या मान्यता प्राप्त विद्यालय परिषदीय विद्यालय कहलातें हैं। प्रदेश में साक्षरता की प्रगति की आवश्यकता को समझते हुये, प्रदेश सरकार द्वारा सुनियोजित परियोजनाओं के माध्यम से हस्तक्षेप किये जाने की आवश्यकता का अनुभव किया गया। इसी पृष्ठभूमि के दृष्टिगत उ. प्र. शासन द्वारा उत्तर प्रदेष बेसिक शिक्षा अधिनियम, 1972 (अधिनियम संख्या-34) के रूप में पारित हुआ। इस अधिनियम का मूल उद्देश्य हाईस्कूल एवं इण्टर कालेजों को छोड़कर प्रदेश के अन्य विद्यालयों में बेसिक/ बुनियादी/ प्राथमिक शिक्षा के गठन, समन्वयन एवं इसके प्रदान किये जाने की क्रिया को नियंत्रित करना था। इस अधिनियम के द्वारा ‘उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद्’ नाम की स्वायत्षाशासी निकाय निदेशक, बेसिक शिक्षा की अध्यक्षता में गठित किया गया। बेसिक शिक्षा परिषद बेसिक प्राथमिक विद्यालयों के

अध्यापकों की नियुक्ति, स्थानान्तरण एवं तैनाती नियंत्रित करती है, विद्यालय समय अवधि निर्धारित करती है तथा प्रदेश में बेसिक/ प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने वाले निजी विद्यालयों को मान्यता देती है।

1.4.2 निजी विद्यालय



ऐसे विद्यालय जिनका पूरा संचालन निजी संस्था या समुदाय द्वारा होता है। ऐसे विद्यालयों में कर्मचारियों को वेतन संस्था द्वारा ही दिया जाता है। ये विद्यालय निजी विद्यालय कहलाते हैं। निजी विद्यालय को मान्यता प्रदाता बोर्ड के आधार दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है। कुछ विद्यालय केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा तथा कुछ विद्यालय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, जो अलग-अलग राज्यों में स्थापित है, द्वारा मान्यता प्राप्त है तथा उनसे संबंधित पाठ्यचर्या का संचालन करते है। निजी विद्यालय एक व्यवसाय का रूप लेते जा रहे है, परन्तु इनका उद्देश्य गुणवत्ता प्रदान करना भी है। गुणवत्ता का यह अन्तर सरकारी और निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के मध्य आसानी से देखा जा सकता है।

प्राइवेट विद्यालय में प्रधानाचार्य की उच्च विद्यालय पर नियम कानून आदि जो भी जिम्मेदारियां होती हैं वह वहां के प्रधानाचार्य लागू करते हैं वही पूरी समय सारणी बनाते हैं वही सब को नियंत्रित करते हैं निजी अथवा प्राइवेट विद्यालयों में सरकारी विद्यालय के मुताबिक ज्यादा सुविधाएं होती हैं। निजी विद्यालयों में अधिकतर नए यंत्रों के द्वारा पढ़ाया जाता है। जैसे कंप्यूटर आदि। बच्चों को यहां सभी चीजें व्यावहारिक रूप से दिखाई जाती है। इन विद्यालयों में शौचालय, पुस्तकालय जैसी मूल सुविधाएं उपलब्ध होती हैं। ऐसे

संस्थानों में दाखिला पाने के लिए बच्चों को एक परीक्षा से गुजरना पड़ता है ऐसा करने से बच्चों को प्रवेश दिया जाता है इन विद्यालयों में सीमित संख्या में ही बच्चों को दाखिला दिया जाता है स्कूलों में हर विषय के लिए अलग-अलग शिक्षक होते हैं। ऐसे विद्यालयों में शिक्षक अपने विषय में निपुण होते हैं और वास्तविक रूप से छात्रों को ज्ञान देते हैं।

1.4.3 मिशनरी विद्यालय



मिशनरी विद्यालय ईसाई समुदाय द्वारा चलाये जाते हैं। ये विद्यालय सामान्य विद्यालयों जैसे ही होते हैं, भारत सरकार के द्वारा दी गयी गाइड लाइन्स का पूरा पालन करते हैं। इनका पाठ्यक्रम भी सरकार के आदेश के अनुसार ही चलता है। ईसाई मिशनरी का मुख्य उद्देश्य तो धर्मांतरण ही है मगर विद्यालय में आने वाले बच्चों पर इसका कोई दबाव नहीं डाला जाता परंतु विद्यालय में पढ़ने वाले ईसाई बच्चों के लिए बाइबिल शिक्षण की व्यवस्था की जाती है। इन विद्यालयों में एक चर्च भी अवश्य होता है जहां यदा कदा त्योहारों के अवसर पर बच्चों को ले जाया जाता है। भारत के सर्व धर्म समभाव को ध्यान में रखते हुए अन्य धर्मों के त्योहारों से भी बच्चों को परिचित कराया जाता है। क्रिसमस पर मिलने वाली लंबी छुट्टियां यहां की विशेषता हैं।

ईसाई धर्म यूरोप से भारत में आया इसलिये वहां की सभ्यता भी हमारे यहां आ गयी। वह सभ्यता मिशनरी स्कूलों का अभिन्न अंग है। अपने विद्यार्थियों को उसी के अनुरूप आचरण करना सिखाते हैं जो भारतीय ढंग वाले स्कूलों में आम नहीं है। विद्यार्थी अपने बड़ों के पैर छू कर या नमस्कार कर के नहीं, गुड मॉर्निंग आदि कह कर अभिवादन करते हैं। अंग्रेज़ी बोलना परम आवश्यक है अन्यथा दंड की व्यवस्था भी होती है। बाकी सब सामान्य विद्यालयों के समान ही होता है।

1.4.4 मदरसा विद्यालय



वे विद्यालय जहाँ पर मुस्लिम धर्म से सम्बंधित शिक्षा दी जाती है। मदरसा शब्द का मतलब है एक ऐसी जगह जहाँ पर शिक्षा दी जाती है। ये इस्लामिक विद्यालय हैं एवं इनके विषयों में उर्दू के साथ-साथ सभी इस्लामिक धर्म से सम्बंधित पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं। आमतौर पर मदरसों में दो तरह के कोर्स पढ़ाये जाते हैं– पहला हिफ़्ज़ जिसको करने के बाद हाफिज की उपाधि मिलती है और दूसरा अलीम जिसको करने के बाद इन लोगों को इस्लाम धर्म का विद्वान माना जाता है। मदरसों में पढ़ाये जाने वाले विषयों में 'तहसिर', 'हदीस', 'शरिआ' और 'मंताक' विषय शामिल हैं. 'तहसिर' में कुरान के बारे में लिखा हुआ है, 'हदीस' में मोहम्मद साहब के पवित्र विचार एवं उनके द्वारा दी गयी सीख, कर्म आदि का वर्णन है, उसके बाद 'शरिआ' में कानून का उल्लेख है, जबकि 'मंताक' में मुस्लिम धर्म का इतिहास पढ़ाया जाता है। हालांकि विरोध के चलते कई मदरसों में अब गणित और विज्ञान का ज्ञान भी दिया जा रहा है।

1.5 प्राथमिक शिक्षा की समस्याएँ

- भौतिक संसाधनों की कमी।
- बालिकाओं के कम नामांकन एवं उपस्थित की समस्या।
- अपव्यय और अवरोधन की समस्या।
- प्रोत्साहन योजनाओं का समय से क्रियान्वित न होना।
- सामुदायिक जागरूकता का आभाव,शिक्षकों की कमी।
- कार्य का बोझ।

- दोष युक्त पाठ्यक्रम की समस्या।
- आर्थिक एवं सामाजिक पिछड़ापन, शिक्षकों में व्यवहार कुशलता एवं उत्तरदायित्व निर्वाहन की कमी।
- विद्यालय का सौंदर्यीकरण एवं आंतरिक व्यवस्था की कमी।
- शिक्षकों का पर्याप्त अभाव ।
- परीक्षा और मूल्यांकन में औपचारिकता।
- छात्रों में विद्यालय एवं शिक्षा के प्रति रुचि में कमी।

1.6 क्राफ्ट कार्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

शिल्प एक व्यवसाय है, जिसके लिए विशेष कौशल और कुशल कार्य के ज्ञान की आवश्यकता होती है। एक ऐतिहासिक अर्थ में, विशेष रूप से मध्य युग और पहले, यह शब्द आमतौर पर छोटे पैमाने पर माल के उत्पादन या उनके रखरखाव में लगे लोगों पर लागू होता है। ऐतिहासिक रूप से, उच्च मूल्य वाले उत्पादों के साथ अधिक विशिष्ट शिल्प शहरी केंद्रों और गठित गिल्डों में केंद्रित थे। उनके व्यवसायों के लिए आवश्यक कौशल और सामानों के आदान-प्रदान में स्थायी रूप से शामिल होने की आवश्यकता अक्सर उच्च स्तर की शिक्षा की मांग करती थी, और शिल्पकार आमतौर पर सामाजिक पदानुक्रम में किसानों की तुलना में अधिक विशेषाधिकार प्राप्त स्थिति में थे। कारीगरों के घर कृषि कार्य में लगे लोगों की तरह आत्मनिर्भर नहीं थे और इसलिए उन्हें माल के आदान-प्रदान पर निर्भर रहना पड़ता था। कुछ शिल्प, विशेष रूप से मिट्टी के बर्तनों, लकड़ी के काम और कपड़ा उत्पादन के विभिन्न चरणों में, अंशकालिक आधार पर कृषि में काम करने

वालों द्वारा अभ्यास किया जा सकता है, और अक्सर ग्रामीण जीवन का हिस्सा बनते हैं। जब एक प्रशिक्षु ने अपनी शिक्षुता समाप्त कर ली, तो वह अपनी दुकान स्थापित करने और जीवन यापन करने के लिए जगह की तलाश में एक यात्री बन गया। अपनी खुद की दुकान स्थापित करने के बाद, वह खुद को अपने शिल्प का स्वामी कह सकता था।

एक शिल्प की महारत के लिए यह चरणबद्ध दृष्टिकोण, जिसमें कुछ शिक्षा और कौशल की प्राप्ति शामिल है, आज तक कुछ देशों में जीवित है। लेकिन औद्योगिक क्रांति के युग के बाद से और उसके दौरान शिल्पों में गहरे संरचनात्मक परिवर्तन हुए हैं । बड़े पैमाने पर उत्पादन बड़े पैमाने पर द्वारा माल के उद्योग बाजार खंडों जिसमें से कार्य कर रहा है या अपने बड़े पैमाने पर उत्पादन के सामान के उद्योग के मोड संभावित खरीदारों की वरीयताओं को संतुष्ट नहीं है करने के लिए शिल्प सीमित है। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप, शिल्पकार आज तेजी से अर्ध-निर्मित घटकों या सामग्रियों का उपयोग करते हैं और इन्हें अपने ग्राहकों की आवश्यकताओं या मांगों के अनुकूल बनाते हैं। इस प्रकार, वे उद्योग और शिल्प के बीच श्रम के एक निश्चित विभाजन में भाग लेते हैं। हाल के वर्षों में, शिल्प और शिल्पकार अकादमिक अध्ययन के विषय के रूप में धीरे-धीरे गति प्राप्त कर रहे हैं। स्टेफनी बुन एक मानवविज्ञानी बनने से पहले एक कलाकार थीं, और उन्होंने शिल्प की प्रक्रिया पर एक अकादमिक रुचि विकसित की, वस्तु के यह तर्क देते हुए कि किसी 'उत्साद' बनने से पहले क्या होता है वह अध्ययन के योग्य क्षेत्र है। गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा, कोठारी कमीशन रिपोर्ट, N.C.E.R.T. की 10 वर्षीय पाठ्यक्रम की

रुपरेखा, इश्वरभाई पटेल समिति की रिपोर्ट, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा 2000 तथा 2005 में इसे शिक्षा का आवश्यक अंग माना है।

1.6.1 गांधीजी की बुनियादी शिक्षा



शिक्षा के क्षेत्र में गांधीजी का बेसिक शिक्षा का फार्मूला एक महानतम देन हैं। उन्होंने बच्चें की बुनियादी शिक्षा कैसी हो उसका स्वरूप क्या हो, इसका सम्पूर्ण मॉडल प्रस्तुत किया था। उन्होंने 1937 में वर्धा के राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन के दौरान भारत में शिक्षा का यह मॉडल प्रस्तुत किया था। जिसमें दसवीं तक अंग्रेजी मुक्त कुटीर उद्योग आधारित थी। जाकिर हुसैन समिति द्वारा गांधीजी द्वारा प्रस्तावित स्कूल शिक्षा की योजना तैयार की और 1938 के हरिपुर सम्मेलन में इसे स्वीकृति मिल गई थी। गांधीजी की बुनियादी शिक्षा को वर्धा शिक्षा योजना के नाम से भी जाना जाता हैं।

बुनियादी शिक्षा की विशेषताएँ

- बुनियादी शिक्षा का पाठ्यक्रम 7 वर्ष की अवधि का था।
- इसमें 7 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को निशुल्क और अनिवार्य शिक्षा की बात कही गई।
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होगी, मगर हिंदी भाषा सभी के लिए अनिवार्य रहेगी।
- बुनियादी शिक्षा का आधार शिल्प था।
- शिल्प शिक्षा के माध्यम से बालकों को आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनाने के उद्देश्य थे।

- शिल्प शिक्षा में सामाजिक एव वैज्ञानिक शिक्षण को महत्व दिया जाए।
- शारीरिक श्रम को महत्ता।
- यह शिक्षा बालक के परिवेश उनके गाँव और शिल्प उद्योग से घनिष्ठ सम्बन्धित हो।
- बालक स्वयं निर्मित उत्पाद का विक्रय कर विद्यालय पर व्यय कर सके।
- लड़के तथा लड़कियों के लिए समान पाठ्यक्रम की व्यवस्था।
- कक्षा 6 और 7 में पढ़ने वाली बालिकाएं बेसिक शिल्प से गृह विज्ञान ले सकती हैं।
- पाठ्यक्रम का स्तर दसवीं के तुल्य हो।
- पाठ्यक्रम में धर्म एवं अंग्रेजी का कोई स्थान नहीं होगा।

1.6.2 कोठारी आयोग (1964-66)



कोठारी आयोग भारत का पहला ऐसा शिक्षा आयोग था जिसने अपनी रिपोर्ट में सामाजिक बदलावों को ध्यान में रखते हुए कुछ ठोस सुझाव दिए। आयोग ने सुझाव दिया कि समान पाठयक्रम के जरिए बालकों एवं बालिकाओं को विज्ञान व गणित की शिक्षा दी जाय। दरअसल, समान पाठयक्रम की अनुशंसा बालिकाओं को समान अवसर प्रदान करती है। 25 प्रतिशत माध्यमिक स्कूलों को परिवर्तित कर दिया व्यावसायिक स्कूल में। सभी बच्चों को प्राइमरी कक्षाओं में मातृभाषा में ही शिक्षा दी जाए। माध्मिक स्तर (सेकेंडरी लेवल) पर स्थानीय भाषाओं में शिक्षण को प्रोत्साहन दिया जाए।1 से 3 वर्ष की पूर्व प्राथमिक शिक्षा दी जाए। 6 वर्ष पूरे होने पर ही पहली कक्षा में नामांकन किया जाए।

पहली सार्वजनिक परीक्षा 10 वर्ष की विद्यालय शिक्षा पूरी करने के बाद ही हो। विषय विभाजन कक्षा नौ के बदले कक्षा 10 के बाद हो। उच्च शिक्षा में 3 या उससे अधिक वर्ष का स्नातक पाठ्यक्रम हो और उसके बाद विविध अवधि के पाठ्यक्रम हों। माध्यमिक विद्यालय दो प्रकार के होंगे, उच्च विद्यालय और उच्चतर विद्यालय। कॉमन स्कूल सिस्टम लागू किया जाए तथा स्नातकोत्तर तक की शिक्षा मातृभाषा में दी जाए। शिक्षक की आर्थिक, सामाजिक व व्ययसायिक स्थिति सुधारने की सिफारिश की।

1.6.3 ईश्वर भाई पटेल समिति (1977)



इस समिति ने कार्यानुभव को समाजोपयोगी उत्पादक कार्य का नाम देते हुए उसके सामाजिक, सांस्कृतिक व मनोरंजनात्मक पक्ष पर विशेष बल दिया। इस समिति ने छः आधारभूत आवश्यक क्षेत्रों की पहचान की यथा भोजन, आवास, वस्त्र, स्वास्थ्य तथा स्वच्छता, संस्कृति और मनोरंजन तथा सामुदायिक कार्य एवं समाज सेवा कार्यानुभव के क्रियाकलाप इन्हीं क्षेत्रों के इर्द-गिर्द विकसित किए जाने का सुझाव दिया।

1.6.4 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में शिक्षा को भारत की वर्तमान स्थितियों एवं आदर्शों के अनुसार बनाया गया। जिसके द्वारा छात्रों में लोकतंत्र के प्रति आदर्श भावना का निर्माण करने एवं लोकतंत्र के प्रति आस्था भाव का विकास करने जैसे विचारों को सम्मिलित किया गया। इसके द्वारा छात्रों को वास्तविक शिक्षा प्रदान करने की योजनाओं का निर्धारण किया गया, जिससे वह अपने भावी जीवन मे जीविकोपार्जन कर सकें एवं समाज मे सम्मानपूर्वक

रह सकें। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में सुधार हेतु सम्पूर्ण देश में एक शिक्षा व्यवस्था को अपनाते हुए 10+2+3 प्रणाली को अपनाया गया। शिक्षा के उत्तम क्रियान्वयन हेतु शिक्षा के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी को केंद्र सरकार, राज्य सरकार एवं जिले के अनुसार विभाजित किया गया। इसमें छात्रों के व्यावहारिक पक्ष एवं शारिरिक पक्ष पर बल देते हुए प्राथमिक शिक्षा में इनको मुख्य स्थान दिया गया। जिससे शिक्षा के द्वारा छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सकें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में देश की विशाल जनसंख्या को देखते हुए निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान रखा गया एवं बुनियादी शिक्षा Basic Education के स्वरूप को स्वीकार किया गया। प्राथमिक शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए ब्लैकबोर्ड योजना का निर्माण किया गया एवं 90 प्रतिशत छात्रों को इसके द्वारा लाभ पहुँचाने की योजना का निर्माण किया गया।

1.6.5 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2000)

वर्ष **2000** में स्कूल शिक्षा के लिए **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2000** (NCF **– 2000**) तैयार की गई। इस **पाठ्यचर्या** का मुख्य जोर अधिगम पर था, जो ऐसी शिक्षा की ओर ले जाता हो जो असमानता से लड़ने में मदद करती है और विद्यार्थियों की सामाजिक, सांस्कृतिक, भावनात्मक तथा आर्थिक आवश्यकताओं को संबोधित करती है।

कार्य शिक्षा

कार्य शिक्षा को उद्देश्य पूर्ण और सार्थक शारीरिक मानवीय श्रम माना गया है, जो शिक्षण प्रक्रिया के अन्तरंग भाग के रूप में आयोजित किया जाता है। इसका परिणाम

सामग्री के उत्पादन और समुदाय की सेवा के रूप में प्रकट होता है जिसमें आत्मसंतोष तथा आनंद का अनुभव भी होता है। इसे शिक्षा के सभी स्तरों पर एक आवश्यक तत्व के रूप में सुनियोजित और श्रेणीबध्य कार्यक्रमों के माध्यम से सिखाना चाहिए। इस क्षेत्र में जिन दक्षताओं का विकास किया जाएगा उनमें ज्ञान, समझ, व्यावहारिक कौशल और मूल आवश्यकता आधारित जीवन क्रियाएं शामिल होंगी। जिन मुख्या कार्य श्रेणियों पर विशेष रूप से जोर देना होगा वह निम्नलिखित हैं—

- ऐसे कार्य जो व्यक्ति के स्वास्थ्य विज्ञान (हाइजीन), वेशभूषा, स्वच्छता आदि से जुड़े हों।
- परिवार में विकसित होने वाले सदस्य के रूप में घरेलू कार्य।
- कक्षा और विद्यालय में किए जाने वाले कार्य और विद्यालय के बाहर से क्रियाकलाप जो विद्यालयीन जीवन और अन्य शिक्षण विषयों के साथ समेकित हो, जैसे शारीरिक शिक्षा, कला शिक्षा, सामाजिक अध्ययन, विज्ञान एवं अन्य। ये कार्य विशेष रूप से कार्य शिक्षा के उद्देश्यों को हासिल करने की दृष्टि से तय किए गए हो।
- समुदाय में कार्य जो नि:स्वार्थ सेवा पर केंद्रित हैं।
- ऐसे कार्य जो व्यवसायिक विकास, उत्पादन, सामाजिक उपयोगिता और कार्य जगत की खोज से जुड़े हो।

कार्य शिक्षा की गतिविधियों का संयोजन इस प्रकार किया जाना चाहिए कि उनसे कार्य शिक्षा के उद्देश्यों को साकार किया जा सके जैसे शारीरिक श्रम के प्रति छात्रों में सम्मान की भावना पैदा करना, आत्मनिर्भरता के लिए मूल्य, सहकारिता की भावना, अध्यवसाय, सहायता करने की भावना, सहिष्णुता और कार्य आचरण। ये तमाम उद्देश्य उन उद्देश्यों के अलावा हैं जो उत्पादक कार्य और सामुदायिक सरोकारों से जुड़े दृष्टिकोण

और मूल्यों का विकास करते हैं। सिद्धांत और व्यवहार भी इस प्रकार के हों कि वे छात्रों को तथ्यों, अवधारणाओं और विभिन्न रूपों में कार्य स्थितियों के अंदर निहित वैज्ञानिक सिद्धांतों को समझने योग्य बना सके। वह कच्चे माल के स्रोतों को जाने, औजारों और उपकरणों के उत्पादन और कार्य-प्रक्रिया के इस्तेमाल को समझें, प्रौद्योगिक रूप में आगे बढ़ने वाले समाज की जरूरत के मुताबिक कौशल अर्जित करें और उत्पादन की स्थितियों में अपनी भूमिका स्वयं सोचें और निश्चित करें। छात्रों में ऐसे कार्यक्रमों के जरिए कुछ कौशल विकसित करने होंगे जैसे पहचानना, चयन करना, व्यवस्थित करना और नवचारात्मक तरीके से विकसित करना। इनके अलावा अन्य कौशल जैसे अवलोकन कुशलता के साथ अंग संचालन और कार्य-अभ्यासों में सहभागिता भी उनकी उत्पादक कुशलता को बढ़ाने के लिए विकसित करनी होगी।

1.6.6 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005)

कार्य और शिक्षा—NCF 2005 भारत में स्कूलों के लिए पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण प्रथाओं के लिए एक दिशानिर्देश के रूप में कार्य करता है। NCF 2005 ने शिक्षा पर पिछली सरकार की रिपोर्टों, जैसे **लर्निंग विदाउट बर्डन और नेशनल पॉलिसी ऑफ़ एजुकेशन 1986-1992** और फ़ोकस ग्रुप डिस्कशन पर अपनी नीतियों को आधारित किया है। कई विचार विमर्श के बाद-NCF 2005 के लिए इनपुट प्रदान करने के लिए 21 नेशनल फोकस ग्रुप पोजिशन पेपर्स प्रकाशित किए गए हैं। NCF 2005 और इसके ऑफशूट पाठ्यपुस्तकों ने प्रेस में विभिन्न रूपों की समीक्षा की है। इसके मसौदा दस्तावेज की केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड (CABE) ने आलोचना की थी। एन.सी.ई.आर.टी के निदेशक कृष्ण कुमार ने भी एक साक्षात्कार में दस्तावेज़ के सामने आने वाली चुनौतियों पर चर्चा की।

NCF 2005 के विषयों में भारत के सभी शैक्षणिक संस्थान शामिल हैं। उदाहरण के लिए इसकी कई सिफारिशें ग्रामीण स्कूलों पर केंद्रित हैं। इसके आधार पर पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का उपयोग सभी सी.बी.एस.ई. स्कूलों और कई राज्य स्कूलों द्वारा किया जा रहा है।

कार्य संबंधी शिक्षा को स्कूल पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग के रूप में बनाया जाता है। कार्य अनुभव, कार्य शिक्षा, SUPW, शिल्प शिक्षा, जीवन उन्मुख शिक्षा, पूर्व व्यावसायिक शिक्षा और सामान्य शिक्षा। कार्य आधारित शिक्षा का उद्देश्य विभिन्न प्रकार के उत्पादन या सेवा उन्मुख गतिविधियों में बच्चों को शामिल करना है, कार्य के माध्यम से कौशल, सकारात्मक दृष्टिकोण और मूल्यों को विकसित करना और कार्य संबंधी दक्षताओं को विकसित करना भी है। NCF ने शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के लिए एक ऐसे पाठ्यक्रम के बारे में लाने का लक्ष्य रखा है जो शिक्षार्थी केंद्रित है, एक लचीली प्रक्रिया है, शिक्षार्थी को स्वायत्तता प्रदान करता है, शिक्षक एक सूत्रधार की भूमिका निभाता है, सीखने में सहायता करता है और प्रोत्साहित करता है, जिसमें शिक्षार्थियों की सक्रिय भागीदारी शामिल है, बहु-विषयक पाठ्यक्रम विकसित करता है, शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करता है, शैक्षिक प्रणाली में कई और भिन्न प्रदर्शन, विविध, निरंतर मूल्यांकन के बारे में बताता है।

NCF के परिप्रेक्ष्य

- रटने की विधि से शिक्षण को स्थानांतरित करना।
- स्कूल के बाहर जीवन से ज्ञान को जोड़ना।

- कक्षा सीखने में परीक्षा को एकीकृत करने और इसे और अधिक लचीला बनाने के लिए।
- पाठ्यक्रम को समृद्ध करने के लिए ताकि यह पाठ्यपुस्तकों से परे हो।
- देश की लोकतांत्रिक राजनीति के भीतर चिंताओं को ध्यान में रखते हुए एक अति-सवारी पहचान का पोषण करना।

1.6.7 राज्य के पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2007)

राज्य की **पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2007** का यह प्रारूप बच्चों की ज्ञान सृजन की क्षमता को केन्द्र में रखकर तैयार किया गया। पाठ्यचर्या में मूल्य आधारित शिक्षा का कोई अलग अध्याय नहीं है, क्योंकि पूरी शिक्षा प्रक्रिया में मूल्य समाहित है।

कार्य अनुभव (कार्य और शिक्षा)

शिक्षा व्यवस्था के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि हम शिक्षा व्यवस्था में ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न करें कि विद्यालय का ज्ञान परिवेश में जाकर हुनर कौशल के रूप ले ले। स्कूली ज्ञान और काम के बीच एक रिश्ता कायम हो। इसके लिए प्राथमिक स्तर पर ही बच्चों को उकसाना होगा कि वह अपना लक्ष्य निर्धारित करें। बच्चों को भविष्य के लिए सपने बुनना और उन्हें साकार करने हेतु कुछ बनने हेतु प्रेरित करना होगा। महात्मा गांधी का शैक्षिक दर्शन शिक्षा प्रणाली में कठिन परिश्रम और काम के साथ सीखने की संस्कृति का विकास करना पाठ्यचर्या का प्रमुख सरोकार है। इससे ज्ञानार्जन और उत्पादन साथ साथ जुड़ेंगे।

उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्र इतने परिपक्व हो जाते हैं कि कुछ कौशल युक्त कार्य गंभीरतापूर्वक कर सकते हैं। अतः मुख्य कार्य-श्रेणियाँ निम्न चार हो सकती हैं–

❖ सामुदायिक स्वास्थ्य एवं स्वच्छता।

- ❖ परिवारिक सदस्य के रूप में घरेलू कार्य।
- ❖ कक्षा और विद्यालय में किए जाने वाले विभिन्न क्रियाकलाप।
- ❖ समुदाय के कार्य जो नि:स्वार्थ सेवा पर केंद्रित हो।
- ❖ व्यावसायिक विकास, उत्पादन, सामाजिक उपयोगिता से जुड़े कार्य।

बच्चों की आयु व योग्यता को ध्यान में रखकर तैयार किया गया उपयोगी काम उनके लिए मूल्यों, बुनियादी वैज्ञानिक अवधारणाओं, कौशलों और रचनात्मक अभिव्यक्ति के रूप में काम करता है। बच्चे काम के द्वारा स्वयं को उपयोगी और महत्वपूर्ण समझते हैं। इसके माध्यम से वह समाज का हिस्सा बनते हैं और ज्ञान के निर्माण में सक्षम हो पाते हैं।

1.7 क्राफ्ट कार्य के आधार

क्राफ्ट कार्य का विकास प्राथमिक शिक्षा के मूल में विद्यमान गांधीवादी दर्शन के परिप्रेक्ष्य में होना चाहिए। हमारा संविधान देश को एक प्रजातांत्रिक, सामाजिक, पंथनिरपेक्ष, काल्पनिक मूल्यों पर आधारित बनाने का प्रयास करता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि बच्चों को क्राफ्ट कार्यों में संलग्न रखा जाए ताकि उनमें उचित मार्गदर्शन का विकास हो सके।

क्राफ्ट कार्यों में भागीदारी तथा उपलब्ध संसाधनों का पूर्ण उपयोग करने पर विद्यार्थी आत्मनिर्भर, मितव्यई, आर्थिक रूप से उत्पादक तथा स्वयं के लिए, परिवार के लिए एवं समुदाय के लिए उपयोगी हो जाता है। क्राफ्ट कार्यों से निर्मित विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के विक्रय से विद्यार्थी धनराशि अर्जित कर सकते हैं। क्राफ्ट कार्य से सम्बन्धित क्रियाकलापों से यह आशा की जाती है कि यह क्रियाकलाप ग्रामीण लोगों के पुनरुद्धार में सहायक सिद्ध होंगे। क्राफ्ट कार्य से शरीर के स्वस्थ विकास के लिए शारीरिक विकास आवश्यक है। विद्यार्थियों को हस्त प्रधान वस्तुओं के निर्माण में शामिल कराना तथा स्वभाविक एवं अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक सेवा के प्रति प्रेरित कराना है। विद्यार्थियों को

विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों में अधिक रूचि होती है। जब एक विद्यार्थी अकेला होता है तब वह वार्तालाप, निर्माण, कलात्मक वस्तुओं के एकत्रीकरण के खेल में अपनी रुचि प्रदर्शित करता है। उस समय वह वातावरण के साथ तदात्म स्थापित करने के लिए उत्सुक रहता है। जिसमें उसे स्वयं करके सीखना अत्यंत प्रिय है। विद्यार्थियों की सहज प्रकृति हेतु एक प्रबल एवं उपयोगी माध्यम प्रदान करते हैं।

1.8 प्राथमिक शिक्षा में क्राफ्ट कार्य

प्राथमिक शिक्षा में क्राफ्ट कार्य भारतीय शिक्षा आधुनिक विषयों में से एक है। यह महात्मा गांधी के विचारों के रूप में विकसित हुई जिसमें कार्य केंद्रीय शिक्षा पर जोर दिया गया। इस प्रकार के कार्य समाज के लिए व्यावहारिक उपयोगिता रखते हैं। गांधीजी की बेसिक शिक्षा योजना का प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण समाज का सामाजिक सुधार करना था, इसमें गांधीजी ने प्राथमिक विद्यालयों में विभिन्न प्रकार के हस्त प्रधान क्रियाकलापों के आयोजन की बात कही। इन क्रियाकलापों के माध्यम से विद्यार्थियों को सामाजिक उपयोगिता एवं उत्पादकता से सम्बन्धित अनुभव प्रदान किए जा सकें। इस विचारधारा का प्रमुख उद्देश्य है यह था कि प्रारंभिक अवस्था में ही विद्यार्थी अपने समाज की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक आवश्यकताओं, आशाओं एवं महत्वाकांक्षाओं को वास्तविक रूप से समझ सके।

क्राफ्ट कार्य भारतीय विद्यालयों का विषय है जहाँ विद्यार्थी विभिन्न व्यावसायिक शिक्षा संबंधी क्रियाकलापों यथा बुनाई, बागवानी, पाक कला, चित्रकला तथा अन्य हस्तशिल्प क्रियाओं में से किसी एक क्रिया का चयन करते हैं। इन विभिन्न क्रियाकलापों में विद्यार्थी समूह के रूप में कुशलता एवं गहनता से कार्य करना सीखते हैं। यह विचारधारा सन 1978 ई० में शिक्षा मंत्रालय द्वारा गांधीवादी मूल्यों तथा उनके विचारों को बढ़ावा देने हेतु प्रकाश में आई। विद्यार्थियों में व्यक्तिगत कौशल का विकास करते हुए क्राफ्ट कार्य

का उदय समुदाय के रूप में कार्य करने की आदत का विकास करना, सामुदायिक विचारधारा को प्रोत्साहन देना, वैज्ञानिक प्रगति के प्रति जागरूकता को बढ़ावा तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना है।

1.9 समस्या का आविर्भाव

उद्देश्यों की प्राप्ति में आने वाले कठिनाइयाँ ही समस्या का कारण बनती हैं। समस्या की अनुभूति उस समय होती है, जब मनुष्य किसी कार्य क्षेत्र विशेष में किसी कार्य के सुचारु संचालन में कठिनाई महसूस करता है। कठिनाई के निवारण हेतु विकल्पों का चयन करता है। मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह बाधाओं में ही समाधान खोजने का प्रयास करता है। जहाँ विभिन्न शिक्षाविदों ने शिक्षा के वृहद अर्थ प्रस्तुत किए हैं, वही आज एक तरफ शिक्षा सूचना एवं तथ्यों की जानकारी बनकर रह गई है। वहीं दूसरी तरफ शिक्षा गुणवत्ता विहीन हो गई है। जिसके पास जितनी अधिक सूचनाएँ तथा जानकारी है उसे उतना ही अधिक शिक्षित माना जाता है। उनका मूल्यांकन भी उसी आधार पर किया जाता है। ऐसी शिक्षा मस्तिष्क का विकास तो कर देती है परन्तु विद्यार्थियों के हृदय का विकास नहीं कर पाती। उन्हें स्वयं को अभिव्यक्त करने के अवसर प्राप्त नहीं होते हैं। पुस्तकीय ज्ञान को अत्यधिक महत्ता उन्हें सीमित एवं कठोर बना देती है, इस पर भी उस ज्ञान की गुणवत्ता संदेहास्पद है। घर-परिवार में भी विषय ज्ञान पर भी बल दिया जाता है। हम शिक्षा से शरीर, मन, एवं आत्मा के विकास की बात करते हैं। परन्तु यह विचारणीय है कि सम्भावित विकास के लिए उचित पर्यावरण होना आवश्यक है। अनुकूल पर्यावरण के अभाव में सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में पुस्तकों का अत्यधिक भार है तथा इस भार को कलात्मकता के साथ साझा करने की आवश्यकता है। इसे उतना ही महत्व दिया जाना आवश्यक है, जितना अन्य विषयों को। प्रत्येक विद्यार्थी स्वयं में अद्वितीय है। अतः शैक्षिक

पाठ्यक्रम में विभिन्न क्रियाकलापों का समावेश आवश्यक है, जिससे उनकी प्रतिभा को अभिव्यक्ति के अवसर प्राप्त हो। इन क्रियाकलापों में सहभागिता से विद्यार्थी अनुभवी एवं कुशल बनेंगे। ऐसे क्रियाकलाप मनोरंजन के साथसाथ उत्पादन ए-वं आत्मनिर्भर बनाने में सहायक हों। प्रस्तुत अध्ययन ऐसे ही कुछ विशेष क्रियाकलापों पर आधारित है।

1.10 समस्या कथन

शिक्षा क्राफ्ट कार्य से संबंधित होनी चाहिए। यह विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल को बढ़ाने वाली होनी चाहिए। प्रस्तुत अध्ययन की समस्याएँ दो बिंदुओं पर आधारित हैं—

प्रथम—विद्यार्थियों का ज्ञान के साथ-साथ मनोरंजनात्मक कौशल विकास।

द्वितीय—स्वच्छता के प्रति सकारात्मक एवं उपयोगी प्रयास।

प्रस्तुत अध्ययन का समस्या कथन निम्नलिखित है—

'प्राथमिक शिक्षा में क्राफ्ट कार्य की प्रभावशीलता का अध्ययन'

1.11 समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण इस प्रकार है–

1.11.1 प्राथमिक शिक्षा

प्राथमिक शिक्षा, जिसे प्रारंभिक शिक्षा भी कहा जाता है यह बालवाड़ी से 5 कक्षा तक के बच्चों के लिए है।

प्राथमिक शिक्षा छात्रों के विभिन्न विषयों की एक बुनियादी समझ के साथ-साथ कौशल भी प्रदान करती है जिससे वह अपने जीवन भर उपयोग करेंगे।

प्रस्तुत लघु शोध में प्राथमिक शिक्षा से तात्पर्य कक्षा 1 से 5 तक के मान्यता प्राप्त विद्यालयों में दी जा रही शिक्षा से है।

1.11.2 क्राफ्ट कार्य

क्राफ्ट कार एक व्यवसाय है जिसमें विशेष प्रकार के कौशल की आवश्यकता होती है। हिंदी में इसे हस्त कौशल शिल्प कारीगरी शिल्प दस्तकारी आज भी कहते हैं। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में छोटे स्तर पर हाथ से सामान बनाने वाले लोगों को शिल्पकार या क्राफ्ट मैन कहते हैं। प्रस्तुत लघु शोध में क्राफ्ट कार्य से तात्पर्य प्राथमिक स्तर के विद्यार्थिओं के लिए उपयोगी हस्त कौशलों युक्त सामग्री के निर्माण से है।

1.11.3 प्रभावशीलता

प्रभावात्मक **शिक्षण** का अर्थ उस **शिक्षण** से है जो कि अधिक से अधिक अधिगम निर्गत का उत्पादन करें। शिक्षक **प्रभावशीलता** अनुसंधान का क्षेत्र है, जिसका संबंध शिक्षक की चारित्रिक विशेषताओं, **शिक्षण** क्रियाओं एवं कक्षा-कक्ष की **शिक्षण** क्रियाओं एवं कक्षा-कक्ष **शिक्षण** की शैक्षिक उपलब्धि से है।

1.12 अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं—

- विद्यार्थियों में क्राफ्ट कार्य के माध्यम से आत्मनिर्भरता एवं स्वालम्बन के गुणों का विकास करना।
- विद्यार्थियों की कलात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्ति का अवसर देना।
- नैतिक खेल एवं शारीरिक शिक्षा तथा आलेखन कला एवं क्राफ्ट कार्य की विषय सामग्री का आलोचनात्मक अध्ययन करना।

- अनुपयोगी वस्तुओं से व्यावसायिक उपयोगिता का सृजन करना।
- विद्यार्थियों में **'करके सीखने'** की अभिवृत्ति का विकास करना।
- क्राफ्ट कार्य से सम्बन्धित नवीनतम सामग्री का अध्ययन करना।
- वर्तमान पाठ्यक्रम पुस्तकों में क्राफ्ट कार्य से सम्बन्धित नवीन विषय सामग्री के समावेशन हेतु सुझाव देना।
- प्रस्तुत अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिन्हित करना।

1.13 अध्ययन की परिसीमांकन

प्रत्येक विषय वस्तु अपने आप में विस्तृत हैं। समय एवं साधनों की उपलब्धता हमारे अध्ययन का स्वरूप निश्चित करती है, इसी स्वरूप में अध्ययन का विकास होता है। सीमांकन अध्ययन का दायरा निश्चित करता है। इसी दायरे के अन्तर्गत ही अध्ययन का प्रारम्भ, विकास एवं समापन होता है। प्रस्तुत लघु-शोध का परिसीमांकन इस प्रकार किया गया है—

1. प्रस्तुत अध्ययन कक्षा 1, 2, 3, 4 एवं 5 में प्रचलित **'आर्ट एण्ड क्राफ्ट कला'** की पुस्तकों के अध्ययन तक सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में क्राफ्ट कार्य के विभिन्न प्रकारों में से कागज एवं माचिस के डिब्बे, गुब्बारे, आइसक्रीम की लकड़ी से बनने वाली उपयोगी एवं उत्पादक वस्तुओं के निर्माण तक सीमित है।
3. प्रस्तुत अध्ययन बाँदा जनपद के केवल चार प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत बालक एवं बालिकाओं द्वारा किए गए अभ्यास कार्य तक सीमित है।
4. प्रस्तुत अध्ययन C.B.S.E. एवं U.P. बोर्ड तक सीमित है।

1.14 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकत

क्राफ्ट कार्य की अवधारणा कार्य एवं शिक्षा के मध्य विद्यमान दूरी को कम करेगी। विद्यार्थियों में सामूहिकता, सहयोग, सामंजस्य, आत्मीयता आदि गुणों का विकास करेंगी। आज विभिन्न विद्यालयों में इस प्रकार के क्रियाकलापों का आयोजन किया जाता है परंतु उच्च कक्षाओं में भी इनसे सम्बन्धित क्रियाकलापों का समावेशन आवश्यक है। यह क्रियाकलाप हृदय एवं मस्तिष्क दोनों का विकास कर उसे सुदृढ़ बनाने का कार्य करते हैं। उत्पादक कार्यों के माध्यम से विद्यार्थी समाज को अपनी महत्वपूर्ण सेवाओं को प्रदान कर सकते हैं। करके सीखना एवं 'अनुभव से सीखना' शिक्षण की सर्वाधिक प्रभावी विधियों में से एक है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए केवल पुस्तकीय ज्ञान ही आवश्यक नहीं है। पुस्तकीय ज्ञान मस्तिष्क को विकसित करता है। मस्तिष्क एवं हृदय एक दूसरे के पूरक हैं। अतः मस्तिष्क एवं हृदय दोनों का संतुलित विकास शिक्षा से होना अनिवार्य है। हृदय अनुभूति का स्रोत है, जिसके विकास लिए हमें विद्यार्थियों को उनकी रूचि के अनुसार अवसर उपलब्ध कराना आवश्यक है, जिससे उनके अंतस में छिपी प्रतिभा को अभिव्यक्ति मिल सके। अतः पाठ्यक्रम में मनोरंजनात्मक, कलात्मक, रुचिपूर्ण, उपयोगी एवं उत्पादक क्रियाकलापों का समावेशन आवश्यक है। यह क्रियाकलाप पुस्तकीय ज्ञान से उत्पन्न उदासीनता को कम कर विद्यार्थियों में उर्जा का संचार करता है तथा उनके गुणात्मक स्तर में वृद्धि करता है। क्राफ्ट कार्य में मानसिक श्रम की अपेक्षा शारीरिक श्रम की प्रधानता है अतः यह सभी स्तर के लिए महत्वपूर्ण है।

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

2.1 प्रस्तावना

मानव विज्ञान के तीन पक्ष होते हैं—ज्ञान को एकत्र करना, एक-दूसरे तक पहुँचाना और ज्ञान में वृद्धि करना। किसी भी विषय के विकास में विशेष स्थान की प्राप्ति के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धांतों से भलीभांति अवगत होना चाहिए। सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा शोधकर्ता यह निश्चित कर सकता है कि उसके द्वारा प्रस्तावित शोध से सम्बन्धित विषयों पर विचारणीय कार्य पहले हो चुका है अथवा नहीं।

प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे वह भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो या सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में, साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य एवं प्रारंभिक कथन है। सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान-कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रतिलेखों, विज्ञप्तियों, प्रकाशित-अप्रकाशित शोध प्रबंधों आदि से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा निर्मित करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। एक अनुसंधान दूसरे अनुसंधान के लिए सहायक सिद्ध होता है। इससे एक तो कार्य की पुनरावृत्ति नहीं होती, दूसरे पहले जिन तथ्यों पर प्रकाश नहीं डाला गया उन पर प्रकाश डालकर शोधग्रंथ को महत्वपूर्ण बनाया जा सकता है।

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के विषय में विभिन्न विद्वानों के मत निम्न प्रकार से हैं—

- **जान डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार,** “व्यावहारिक दृष्टि से समस्त मानवीय ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालय में उपलब्ध हो सकता है। मानव समाज अपने प्राचीन अनुभव

को संग्रहित व सुरक्षित रखता है। ज्ञान के अथाह भंडार में मानव का निरंतर योग सभी क्षेत्रों में इसके विकास का आधार है।”

“practically all human knowledge can be found in books and libraries. Unlike other animals that must start a new with each generation man build upon the accumulated and recorded knowledge of the past. His constant adding to the vast store of knowledge make possible progress in all the areas of human endeavor.”

- **रमल के अनुसार,** “नियमानुसार कोई भी शोध से सम्बन्धित लिखित विवरण तब तक उपयुक्त नहीं समझा जा सकता है जब तक उस शोध से सम्बन्धित साहित्य का आधार उस विवरण में ना हो। अनुसंधानकर्ता, अन्य अनुसंधानकर्ताओं के कार्यों का परीक्षण करते हुए अनुसंधान की विधि, तथ्यों, विचारों तथा उन सहायक ग्रंथों से अवगत होता है जो उसके लिए अत्यंत लाभदायक एवं सहायक सिद्ध होते हैं।”

  “Any written description related to research can not be considered appropriate until the literature related to that research is not based in that description which proves to be very beneficial and helpful for him.”

- **ट्रैवर्स के अनुसार,** “किसी भी क्षेत्र की समस्याओं एवं तथ्यों से परिचित होने के लिए उस विषय से सम्बन्धित साहित्य को पढ़ना आवश्यक होता है, सम्बन्धित साहित्य की समस्याओं एवं तथ्यों के ज्ञान से शोधकर्ता विषय हेतु संगत तथा असंगत बातों की जानकारी प्राप्त करता है।”

"To get acquainted with the problems and facts of any field, it is necessary to read the literature related to that subject"

उपरोक्त परिभाषाओं से सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य प्राप्त होते हैं–

- साहित्य के पुनरावलोकन से शोधकर्ता को विषय की गहराई तक पहुंचने में सफलता मिलती है।
- शोधकर्ता यह जान जाता है कि सम्बन्धित क्षेत्र में अभी तक कितना कार्य हो चुका है तथा कितना करना शेष है।
- शोधकर्ता जागरूक हो जाता है तथा समस्या के सभी पक्षों पर सोच-विचार करता है।
- शोध में प्रयुक्त की जाने वाली विधियां, न्यादर्श, परीक्षण तथा वर्गीकरण करने हेतु मार्गदर्शन मिलता है।
- यह परिणामों के विश्लेषण में सहायता करता है तथा उपयोग, निष्कर्षों एवं तुलनात्मक तथ्यों को निर्धारित करता है अर्थात सम्बन्धित अध्ययनों से निकाले गए निष्कर्षों की तुलना की जा सकती है।
- समस्या के परिभाषीकरण, अवधारणाएँ, सीमांकन तथा परिकल्पना के निर्माण में सहायता करता है।

इस प्रकार पूर्व शोधों का पुनरावलोकन वर्तमान में किए जाने वाले शोध हेतु प्रकाश स्तंभ का कार्य करता है। सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन शोधार्थी को ज्ञान के उस शिखर तक ले जाता है जहां वह अपने क्षेत्र की नवीन समस्याओं से परिचित होता है। वास्तव में सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना वह उचित दिशा में एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता। जब तक उसे यह ज्ञान न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है? किस विधि

से कार्य हुआ है? तथा उसके निष्कर्ष क्या रहे हैं? वह अपने शोध कार्य को आगे नहीं ले जा सकता। अतः सम्बन्धित साहित्य अनुसन्धान के सभी स्तर पर सहायता प्रदान करता है।

2.2 अध्ययन से सम्बन्धित कतिपय शोध कार्य

प्रस्तुत लघु शोध कार्य में क्राफ्ट एवं शिल्प से सम्बन्धित विभिन्न पूर्वर्ती शोधों का अध्ययन किया गया है। जिनका विवरण निम्न प्रकार है–

1. कुशवाहा, ज्ञानवती (2019) ने प्राथमिक शिक्षा में क्राफ्ट कार्य वर्तमान परिदृश्य एवं भावी संभावनाएं का अध्ययन किया। जिसमें न्यादर्श के रूप में बांदा जिला के अतर्रा नगर के 4 प्राथमिक विद्यालयों के कुल 95 छात्र तथा 67 छात्राओं को शामिल किया गया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यालय पाठ्यक्रम में सम्मिलित नैतिक खेल एवं शारीरिक शिक्षा तथा क्राफ्ट कार्य को व्यवहारिक रूप नहीं दिया जाता है। शासकीय विद्यालयों की स्थिति अशासकीय विद्यालयों की अपेक्षा अधिक दयनीय है। शिक्षकों का विद्यार्थियों की आंतरिक प्रतिभाओं को उभारने के प्रयास नगण्य है।

2. गुप्ता, प्रियंका (2020) ने शिक्षा में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं आधुनिक प्रवृत्तियों का अध्ययन किया। जिसमें न्यादर्श के रूप में बांदा जिले के अतर्रा नगर के उच्च प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों की 20-20 बालिकाओं को शामिल किया गया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली ज्ञानात्मक पक्ष पर अधिक बल देती है। भावात्मक एवं कौशलात्मक लक्ष्य उपेक्षित स्थिति में है। विद्यालयी पाठ्यचर्या में सह-पाठ्यगामी क्रियाओं के आयोजन के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण उदासीनता पूर्ण है।

3. सक्सेना, प्रिया (2012) ने Development of Art and Craft from 1000 BC to 600 BC का अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि कला और शिल्प संगठन

का उदय, व्यापार, अधिशेष, उत्पादन, केन्द्रित राजनीतिक और सामाजिक स्तरीकरण का अस्तित्व शहरीकरण के साथ एक महत्वपूर्ण लक्ष्य माना जा सकता है।

कुछ शिल्प उद्योग जैसे लोहा, वुट्ज स्टील, मिट्टी के बर्तन और अन्य कलात्मक वस्तुएं जो 1000 ई० पू० में प्रस्तुत थी। हस्तिनापुर उत्खनन से एवं PGW साइटों से विभिन्न प्रकार के मोतियों को बरामद किया गया था जिन्हें महान शिल्प कौशल और अलंकरण के उदाहरण के रूप में माना जा सकता है। भारत में वर्तमान कार्य में विभिन्न प्रकार की कलाओं और शिल्पों का अध्ययन कई तरह से किया गया जैसे मिट्टी के बर्तन, हाथी दांत, मनके, टेराकोटा, धातु, कपड़ा और अन्य।

4. चतुर्वेदी, श्यामलाल (1956) ने Craft as an Educational Medium in Elementary School का अध्ययन किया। जिसमें न्यादर्श के रूप में कक्षा 4 के 23 तथा कक्षा 3 के 32 विद्यार्थियों को शामिल किया इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि बच्चे की शिक्षा को एक उपयोगी हस्तशिल्प सिखाकर और इसे उत्पादन करने में सक्षम बनाकर शुरू करके हर स्कूल को स्वावलंबी बनाया जा सकता है। ग्रामीण हस्तशिल्प जैसे कताई और कार्डिंग इत्यादि के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने की योजना को एक सामाजिक क्रांति के अग्रदूत के रूप में माना जाता है जो एक स्वस्थ और नैतिक आधार प्रदान करेगा। शिक्षा किसी न किसी प्रकार के शारीरिक और उत्पादक कार्यों के इर्द-गिर्द होनी चाहिए और अन्य सभी गतिविधियां विकसित की जानी चाहिए जहां तक संभव हो केंद्रीय हस्तशिल्प से संबंधित होना चाहिए। शिक्षा की व्यवस्था धीरे-धीरे स्कूल के चल रहे खर्चों को पूरा करने में सक्षम होनी चाहिए ताकि स्वालंबी बन जाए। शिल्प बच्चे के भौतिक और सामाजिक वातावरण के बीच एक मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है।

5. पार्थ, प्रतिमा सिकदर (2016) ने Pedagogical Import of Art and Craft का अध्ययन किया, जिसमें न्यादर्श के रूप में दो स्कूलों से कुल 100 छात्रों का सैंपल लिया गया और प्रत्येक स्कूल से अलग-अलग कक्षाओं से नमूने का चयन किया गया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि दोनों स्कूलों में कला और शिल्प शिक्षा की समग्र स्थिति समान रूप से अच्छी है और कार्य शिक्षा के उद्देश्यों को सही ढंग से पूरा करती है। छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए स्कूल प्रशासन को समय-समय पर कला और शिल्प के नियमित प्रदर्शन का विधिवत ध्यान रखना चाहिए। भारतीय शिल्प और इसके लाखों अभ्यास करने वाले शिल्पकार पारंपरिक ज्ञान और स्वदेशी प्रौद्योगिकियों का एक विशाल और महत्वपूर्ण संसाधन है। शिल्प परंपराओं को सीखने से छात्रों में कई कौशल विकसित किए जा सकते हैं। कला और शिल्प कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को दूसरों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने, समाज में सौहार्दपूर्ण ढंग से रहने, आत्मनिर्भरता की भावना विकसित करने, लाभकारी गतिविधियों में खाली समय बिताने, रचनात्मक रूप से सोचने में सक्षम बनाना है। कला की समझ और प्रशंसा हमारे सौंदर्य बोध को विकसित करती है। व्यावसायिक कला सीखने के बाद छात्र कलाकार, डिजाइनर आदि बन सकता है।

6. चौधरी, अनामिका (2019) ने Traditional Art and Craft of Sub-Himalayan Darjeeling Historical Study का अध्ययन किया । जिसमें न्यादर्श के रूप में उप-हिमालय दार्जिलिंग क्षेत्र की महिलाओं और पुरुषों की विभिन्न पारंपरिक कला और शिल्प जैसे कालीन, हथकरघा, विभिन्न धातु की वस्तुएँ, आभूषण आदि को शामिल किया । इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि पारंपरिक कला एक संगठित राष्ट्रीय संस्कृति का परिणाम है। भारती कला एक अंतर्ज्ञान और धार्मिक कला है और इसे सहज और

अध्यात्मिक आंखों से देखा जाना चाहिए। हस्तशिल्प प्रशिक्षण को बढ़ाने के साथ-साथ बेरोजगारी, श्रमिकों के रोजगार के अवसर, व्यावसायीकरण और इसकी स्थानीय बाजार अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना चाहिए। हस्तशिल्प उद्योग महिलाओं के सशक्तिकरण के संदर्भ में मजबूत करने में सकारात्मक लाभ है। कुटीर उद्योग के साथ पारंपरिक कला और शिल्प ने कमाई का नया रास्ता खोल दिया है जो बदले में बेरोजगारी की स्थिति को कम करता है। अतः उल्लेखनीय है कि उप- हिमालय दार्जिलिंग क्षेत्र के कारीगरों की भूमिका और स्थिति में बदलाव लाने के लिए पारंपरिक हस्तशिल्प उद्योग का सकारात्मक प्रभाव हो सकता है।

7. शर्मा, शीतल (2016) ने छत्तीसगढ़ जनजातियों के आर्थिक विकास में हस्तशिल्प कला का योगदान का अध्ययन किया। जिसमे न्यादर्श के रूप में 2750 में से 100 बेसमेटल में तथा 80 काष्ठ कला कुल 180 हस्तशिल्प कारीगरों को शामिल किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि हस्तशिल्प व्यवसाय में मुख्यतः पिछड़ी हुई जनजातियों के कारीगर सम्मिलित, ये इसी व्यवसाय से अपना अर्थोपार्जन करते हैं। इस क्षेत्र में 14 हस्तशिल्प कलाएँ प्रसिद्ध हैं जिनमे बेसमेटल एवं काष्ठकला मुख्य है। भारत में लघु व कुटीर उद्योग बहुत पाए जाते हैं इन्ही उद्योगों में हस्तशिल्प भी सम्मिलित है जो अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है और काफी लोगो को रोजगार प्रदान करता है। छत्तीसगढ़ के हस्तशिल्प उत्पादों का निर्यात फ्रांस, जर्मनी, यूरोप, चीन जैसे देशों में होता है भारतियों को व्यवसाय प्रदान करता है। हस्तशिल्प विकास बोर्ड के अधिकारियों से प्राप्त सर्वेक्षण में से 90% अधिकारियों ने कारीगरों को उचित रोजगार देने की व्यवस्था की बात कही और 95% अधिकारियों द्वारा यह बात स्वीकार की गई की उत्पादों के विक्रय बढ़ाने हेतु प्रदर्शिनियाँ व मेले इन्हें सहायता प्रदान करते हैं।

75% कारीगरों ने बताया कि उन्हें उचित परिश्रमिक नहीं मिल पा रहा है और सरकारी योजनाएँ पूर्णरूप से लागु नहीं हो पा रही हैं।

8. शर्मा, कीर्ति (2015) ने कच्छ की लोक कला एवं हस्तशिल्प: एक अध्ययन का अध्ययन किया। जिसमे न्यादर्श के रूप में कच्छ की लोक कला एवं हस्तशिल्प क्षेत्र की महिलाओं एवं पुरुष की विभिन्न पारंपरिक कला और शिल्प जैसे–स्वस्तिक, श्रीवत्स, सूर्य चक्र, पशु-पक्षी चित्रण, प्रकृति चित्रण, विवाह के आभूषण आदि को शामिल किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि सौन्दर्याभिव्यक्ति का प्रमुख साधन कला है चाहे वह किसी भी माध्यम के रूप में हो। सौन्दर्य चाहे प्रतीकों के रूप में हो या गीतों में अथवा हस्त निर्मित वस्तुओं में यह स्वतः ही आकर्षण का स्रोत बन जाता है और यही आकर्षण कच्छ की लोककलाओं व शिल्पों का प्रमुख आधार सिद्ध हुआ है। प्रकृति के अभाव में प्रकृति चित्रण इस क्षेत्र को रंगमंच कर देता है जिसके कारण देश ही नहीं अपितु विदेशी भी इस ओर आकर्षित होते रहे हैं, व वर्तमान में भी उनके दर्शन व अध्ययन हेतु यहाँ आते रहते हैं।

9. (2012 साहू, छविराम) ने जनजातीय हस्तकलाएँ: एक ऐतिहासिक अध्ययन (बस्तर के विशेष संदर्भ में) का अध्ययन किया। जिसमे न्यादर्श के रूप में बस्तर क्षेत्र में प्रचलित विभिन्न कलाओं के आधार पर 581 सदस्यों को शामिल किया गया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि बस्तर की अधिकांश जनजातियाँ प्राचीन काल से ही लकड़ी, बाँस , मिट्टी, एवं मिश्र धातु को अपने हाथों से भिन्न-भिन्न आकार प्रदान करके अपने कला अभिव्यक्ति का प्रदर्शन करते रहे हैं। वर्तमान में बस्तर के गोंड,मुरिया, माडिया, भतरा, हल्बा, एवं परजा आदि जनजातियाँ अपनी रूचि के अनुसार अलग-अलग कलाकृतियाँ जैसे– बाँस शिल्प, घड़वा शिल्प, काष्ठ शिल्प, लौह शिल्प, एवं मृदा शिल्प, के निर्माण कार्य में लगे हुए हैं और इससे जीवन-यापन करते हैं। जनजातीय हस्तशिल्प उद्योग बस्तर की समृद्ध संस्कृति, परम्परा और भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता और विरासत के लिए एक अद्वितीय

और विशाल संसाधन प्रदान करता है साथ ही साथ समाज के कमजोर वर्गों एवं पिछड़ा वर्ग को रोजगार के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करता है। आधुनिकता और पेड़ों की अधाधुंध कटाई से काष्ठ कला का नुकसान हुआ है, भवन निर्माण में लोहे का अधिक प्रयोग के चलते अब घरों में इस कला को जगह नहीं मिल पा रही है। बाँस की खेती और उस पर आधारित हस्तशिल्प और कुटीर उद्योगों के जरिए छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन की व्यापक सम्भावनाएँ देखी जा रही हैं।

10. बिष्ट, नीलम (2015) ने जनपद अल्मोड़ा का हस्तशिल्प: एक अध्ययन (स्वतंत्रता के पश्चात 2010 ई०) का अध्ययन किया। जिसमे न्यादर्श के रूप में 50 हस्तशिल्पकारों को उनके विभिन्न हस्तकलाओं के आधार पर शामिल किया गया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि माशीनीकरण और औद्योगिकरण हस्तशिल्प पर हावी हो चुका है जिससे हस्तशिल्पियों को काफी आघात पंहुचा है। काष्ठ द्वारा निर्मित शिल्प केवल कृषि उपकरण तक ही सीमित रह चुके हैं। जो हस्तशिल्प अतीत में यहाँ के हस्तशिल्प कलाकारों की जीविका का मुख्य माध्यम था, वर्तमान समय में लुप्ती की ओर है। प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण कुमाऊँ के जनपद अल्मोड़ा की एक सांस्कृतिक पहचान है जो प्रागैतिहासिक काल से ही मानव संस्कृति का केंद्र रहा है। हाथ द्वारा निर्मित दैनिक उपयोग की वस्तुओं का निर्माण हस्तशिल्पी अत्यधिक कुशलता और श्रम से करते हैं। हस्तशिल्प का यहाँ के समाज में दैनिक उपयोगिता के अधार पर महत्वपूर्ण स्थान रहा है। जनपद अल्मोड़ा में मुख्यतः धातु आधारित हस्तशिल्प का निर्माण किया जाता था लेकिन वर्तमान में काष्ठ आधारित हस्तशिल्प भी यहाँ विद्यमान है।

11. चरण, विमल (1992) ने हिमालय प्रदेश में माध्यमिक स्तर पर समाजोपयोगी उत्पादक कार्य कार्यक्रम: एक मूल्यांकन अध्ययन का अध्ययन किया। अध्ययन किए गए लघु शोध में हिमालय प्रदेश के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में संचालित अति सूक्ष्म

पहलुओं का विस्तार से विवेचन किया गया है। प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर हेतु SUPW से संबंधित विभिन्न क्रियाकलापों को चिन्हित किया गया है। विद्यालयों में शिक्षा व्यवस्था को समझने के लिए प्रश्नावली का उपकरण के रूप में प्रयोग करके विद्यालयों की स्थिति को दर्शाया गया है। आधुनिक भारत के विद्यालयों में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के मूल्यांकन की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है।

2.3 क्राफ्ट कार्य से सम्बंधित पुस्तकें एवं लेख इत्यादि

1. एम. वी. नारायण (2002) ने अपनी पुस्तक **हमारा हस्तशिल्प** में हस्तशिल्प वस्तुओं के विषय, वैविध्य, कुशल कलाकार और भारत की प्रमुख हस्तशिल्प के बारे में प्रकाश डाला है।



2. निदा फातिमा (2019) ने अपनी पुस्तक **Rise Up Art and Craft** में विद्यार्थिओं को NCF-2005 द्वारा निर्धारित दिशा-निर्देशों के अनुसार कला और शिल्प की मूल बातें सिखाने का एक प्रयास किया है। यह बच्चों के रोजमर्रा की चीजें, जीवन कौशल और आनंदमय कला अभ्यास विकसित करने में मार्गदर्शन करेगी।



3. कमल जैन (2019) ने अपनी पुस्तक **Colours & Craft-5** में कला और शिल्प दोनों गतिविधियों को अच्छी तरह से वर्गीकृत किया है। इसका उद्देश्य बच्चों के लिए डिजाइन की गई परियोजनाओं के माध्यम से रचनात्मकता को बढ़ाना और उनमे आत्म-सम्मान का निर्माण करना है।



4. राकेश कुमार (2017) ने प्रकाशित लेख में हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद के बढ़ते कदम और देश के निर्यात क्षेत्र में हस्तशिल्प उत्पादों की अहम भूमिका के बारे में बताया। इसमें उन्होंने बताया कि क्राफ्ट कार्य से बनी वस्तुओं से लोगों को रोजगार प्राप्त होता है और इनसे बना सामान सजावट में काम आता है।

5. एस.एस. गुप्ता (2013) ने प्रकाशित लेख में बताया है कि हस्तशिल्प उद्योग हमारी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है और भारतीय हस्तशिल्प में बहुत अधिक विविधता है। हस्तशिल्प के माध्यम से लाखों लोगों को रोजगार मिलता है।

2.4 निष्कर्ष

उपर्युक्त वर्णित शोध, पुस्तकों, तथा लेख साहित्य ने अध्ययन को मजबूत ऐतिहासिक आधार प्रदान करने में उपयोगी भूमिका निभाई है। इन सन्दर्भों में क्राफ्ट कार्य से सम्बंधित विभिन्न आयामों एवं क्षेत्रों का दृष्टिपात किया गया है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था से क्या अपेक्षाएँ हैं? इस पर भी दृष्टिपात किया गया है।

यह विचारणीय है कि सभी साहित्य एवं दस्तावेजों में क्राफ्ट कार्य से सम्बंधित क्रियाकलापों के प्रयोगात्मक अनुप्रयोगों का अभाव है। अध्ययन से सम्बन्धित पूर्ववर्ती शोधों में प्राथमिक शिक्षा में क्राफ्ट कार्य वर्तमान परिदृश्य एवं भावी संभावनाएँ, शिक्षा में समाजोपयोगी कार्य, Development of Art and Craft, Craft as an Educational Medium in Elementary School, Pedagogical Import of Art and Craft, Traditional Art and Craft, छत्तीसगढ़ जनजातियों में हस्तशिल्प,कच्छ की लोक कला, बस्तर हस्तकलाएँ एवं अल्मोड़ा के हस्तशिल्प का अध्ययन किया गया है। शोधकर्ता द्वारा पूर्ववर्ती शोधों में प्रयुक्त चार क्राफ्ट कार्यों का संशोधित एवं परिवर्धित स्वरुप तथा आठ नवीन क्राफ्ट कार्यों को लघु शोध में सम्मिलित किया गया है जो कि एक सर्वथा नवीन प्रयास है।

तृतीय अध्याय

शोध अध्ययन की प्रक्रिया

3.1 शोध विधि

प्रत्येक कार्य को पूर्ण करने के लिए किन्हीं मान्य सिद्धान्तों का अनुसरण करना अनिवार्य है। यही मान्य सिद्धान्त अध्ययन को प्रमाणिकता प्रदान करते हैं। प्रत्येक अध्ययन एक विशेष प्रकार की समस्या का वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करता है। अतः विभिन्न प्रकार की समस्याओं की प्रकृति के ऊपर निर्भर है कि अध्ययन कैसा होगा अथवा उसकी विधि क्या होगी? समुचित वैज्ञानिक निष्कर्ष के लिए तो सबसे अच्छा होगा कि अध्ययनकर्ता किसी समस्या से ऐतिहासिक पक्ष का विश्लेषण करें तथा वर्तमान का अध्ययन कर, आवश्यकतानुसार प्रयोग भी करें। इस प्रकार समन्वित प्रणाली ही सर्वोत्तम प्रणाली है।

अधिकांश लेखकों ने प्रयोगात्मक और अप्रयोगात्मक शोध के लिए विभिन्न अध्ययन विधियों का विवरण प्रस्तुत किया है, जो इस प्रकार हैं—

1. मूलभूत एवं व्यावहारिक शोध (Fundamental or Basic Research)
2. व्यवहृत शोध (Applied Research)
3. प्रविधि शोध (Technique Research)
4. ऐतिहासिक शोध (Historical Research)
5. प्रयोगात्मक शोध (Experimental Research)
6. सर्वेक्षण शोध (Survey Research)
    a) वर्णनात्मक सर्वेक्षण (Descriptive Survey)

b) विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण (Analytical Survey)

c) विद्यालय सर्वेक्षण (School Survey)

d) सामाजिक सर्वेक्षण (Social Survey)

प्रत्येक अध्ययन विधि का अपना एक सीमित क्षेत्र है। चयनित अध्ययन विधि उसी क्षेत्र में प्रमाणित परिणाम दे सकती है जिस क्षेत्र तथा कार्य के लिए उसे अधिकृत किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध की पूर्ति हेतु 'प्रयोगात्मक' (Experimental Method) शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रयोगात्मक शोध– प्रयोगात्मक शोध सामाजिक अनुसंधान की वह विधि है, जो प्रयोग के आधार पर की जाती है। समाजशास्त्रीय अनुसंधान में परीक्षणात्मक या प्रयोगात्मक शोध अभिकल्प प्रणाली एक विकसित एवं उन्नत विधि है, जिसके अन्तर्गत हम सूक्ष्म समस्या का सूक्ष्म समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं। प्रयोगात्मक अनुसंधान पद्धति उपयोगिता की दृष्टि से अत्यंत व्यावहारिक है, क्योंकि इसमे भी प्राकृतिक विज्ञानों की तरह ही यथार्थ एवं निश्चित परिणाम प्राप्त करने के लिए सामाजिक घटनाओं का अध्ययन नियन्त्रित परिस्थिति मे किया जाता है। प्रयोगात्मक अथवा परिस्थिति पर सावधानीपूर्वक नियन्त्रण करके प्रयोगात्मक चर अनुसंधान इस बात की स्पष्ट व्याख्या करता है कि जब सम्बंधित चरों में परिवर्तन किया जाये तो क्या परिणाम प्राप्त होंगे।

जहोड़ा के अनुसार, "प्रयोग उपकल्पना के परीक्षण की एक विधि है।"*****

Jahoda– "Experimentation is a method of testing hypotheses"*****

ग्रीनवुड– "प्रयोग कार्य-कारण सम्बन्ध को व्यक्त करने वाली उपकल्पना के परीक्षण की विधि है, जिसमें नियन्त्रण परिस्थितियों के कार्य-कारण सम्बन्धों का मूल्यांकन करते हैं।"*

Greenwood– "Experimentation is a method of testing hypotheses expressing a causal relationship in which the causal relationship is evaluated under control conditions."*

एवडवर्सन– "जब एक अनुसंधान समस्या के सम्बन्ध में एक अध्ययनकर्ता कुछ चरों पर नियंत्रण या प्रत्यक्ष हस्तक्षेप स्थापित करता है, तब इस प्रकार की अनुसंधान प्रक्रिया को प्रायः एक प्रयोग कहा जाता है।"*

Evdavarson– "When a researcher establishes control or direct intervention on certain variables in relation to a research problem, this type of research process is often called an experiment"*

चेपिन– "समाजशास्त्रीय शोध में प्रयोगात्मक अभिकल्पना की धारणा नियन्त्रण की दशाओं में अवलोकन के द्वारा मानव सम्बन्धों के व्यवस्थित अध्ययन की ओर संकेत करती है।"*

Chepin– "The concept of experimental design in sociological research refers to the systematic study of human relationships through observation under control condition."*

कार्य-कारण सम्बन्धों को स्थापित करने के लिए **प्रयोगात्मक शोध** में दो समूह होते हैं। प्रयोगात्मक समूह में शोधकर्ता द्वारा स्वतन्त्र चर में जोड़-तोड़ किया जाता है। यह सिद्ध किया जाता है कि यदि कारण है तो इसका प्रभाव होगा। जोड़-तोड़ का प्रभाव आश्रित चर

प्रयोगात्मक, 2020

पर देखा जाता है। नियन्त्रित समूह में शोधकर्ता द्वारा स्वतंत्र चर में कोई जोड़-तोड़ नहीं किया जाता है। यह सिद्ध किया जाता है की यदि कारण नहीं है तो इसका प्रभाव भी नहीं है।

3.2 अध्ययन समष्टि

वर्तमान शोध समष्टि के अंतर्गत 5 से 10 वर्ष की आयु समूह के छात्र-छात्राएँ समाविष्ट हैं जो बांदा जनपद के प्राथमिक विद्यालय की कक्षा 5 में अध्ययनरत हैं।

3.3 न्यादर्श चयन विधि

शोध के संदर्भ में प्रतिदर्श चयन के निमित्त सुविधानुसार प्रतिदर्श चयन प्रविधि को ग्रहण किया गया।

3.4 लक्षित न्यादर्श का चयन

लक्षित न्यादर्श (Target Sample) के चयन हेतु निम्नांकित प्रक्रिया का अनुकरण किया गया—

3.4.1 जनपद का चयन एवं न्यायोचितता

वर्तमान लघु शोध अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा बाँदा जनपद के विद्यालयों का चयन किया गया है, जिसके अंतर्गत अतर्रा नगर के एक विद्यालय और बाँदा जनपद के तीन विद्यालय लिए गए हैं।

3.4.2 विद्यालयों का चयन

लघु शोध अध्ययन हेतु बाँदा जनपद स्थिति अतर्रा नगर के एक प्राथमिक विद्यालय (परिशिष्ट—I) और बाँदा नगर के तीन प्राथमिक विद्यालयों (परिशिष्ट—II) का चयन सुविधानुसार प्रतिदर्श विधि द्वारा किया गया।

अतर्रा नगर एवं बाँदा नगर में चयनित प्राथमिक विद्यालयों (परिशिष्ट—III & IV) में पंजीकृत विद्यार्थियों तथा चयनित विद्यार्थियों को निम्न तालिका द्वारा प्रदर्शित किया गया है—

क्रम संख्या	**चयनित प्राथमिक विद्यालय**	**कक्षा 5 में पंजीकृत विद्यार्थिओं की संख्या**		**परीक्षण के समय उपलब्ध विद्यार्थिओं की संख्या**	
		छात्र	**छात्राएँ**	**छात्र**	**छात्राएँ**
1	तथागत ज्ञानस्थली सी.से.स्कूल, अतर्रा	30	20	15	10
2	•• गवत् प्रसाद मेमोरियल इण्टर कॉलेज , बाँदा	20	15	10	5
3	सरस्वती विवेक मंदिर, बाँदा	15	10	7	7
4	विद्यावती निगम सी.से.स्कूल, बाँदा	20	15	10	5
योग		**85**	**60**	**42**	**27**
		कुल योग		**69**	

3.4.3 प्रतिदर्श चयन

असम्भाविता विधि द्वारा चयनित प्राथमिक विद्यालयों में से लक्षित प्रतिदर्श चयन सुविधानुसार विधि द्वारा किया गया। परीक्षण प्रशासन के दिवस उपलब्ध समस्त विद्यार्थियों को प्रतिदर्श में सम्मिलित कर लिया गया। अतर्रा, बांदा जिला में अवस्थित विद्यालयों के प्राथमिक कक्षा में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को अध्ययन में इस कारण सम्मिलित किया गया क्योंकि जीवन की इस अवस्था में छोटे बच्चों में क्राफ्ट कार्य के प्रति अधिक रूचि होती है साथ ही वे मनोरंजनात्मक तरीके से काम को करते हैं। इस अवस्था में बच्चों में सीखने की जिज्ञासा अधिक होती है।

चयनित प्रतिदर्श का लिंगानुपात वितरण

विद्यालय	**छात्र**	**छात्राएं**	**योग**
तथागत ज्ञानस्थली सी.से.स्कूल, अतर्रा	15	10	25
•• गवत् प्रसाद मेमोरियल इण्टर कॉलेज, बाँदा	10	5	15
सरस्वती विवेक मंदिर, बाँदा	7	7	14
विद्यावती निगम सी.से.स्कूल, बाँदा	10	5	15
योग	**42**	**27**	**69**

कुल चयनित 69 विद्यार्थिओं में से मात्र 60 विद्यार्थी ऐसे थे जिन्होंने समस्त परीक्षणों को पूर्ण किया।

3.5 प्रयोगों का प्रशासन

प्रयोगों का प्रशासन शोधार्थी द्वारा एक चरण में किया गया। जिसके अन्तर्गत विद्यार्थियों पर परीक्षण प्रशासित किए गए। सर्वप्रथम चयनित प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों एवं कक्षाध्यापकों से आज्ञा प्राप्त की गई। तत्पश्चात प्रयोगों को प्रशासित करने से पूर्व चयनित कक्षाओं के विद्यार्थियों से शोधार्थी द्वारा सौहार्द संबंध स्थापित किए गए एवं उनको शोध उद्देश्यों से परिचित कराया गया। संबंध स्थापन के पश्चात विद्यार्थियों को सभी प्रयोगात्मक सामान एक-एक करके वितरित किया गया। सभी प्रयोगों का प्रशासन 4 दिन की समय अवधि में समाप्त किया गया और क्राफ्ट कार्य से संबंधित अनेक प्रकार की सामाग्रियाँ बनाई और विद्यार्थी द्वारा समस्त क्राफ्ट कार्य पूर्ण करने के पश्चात उन्हें एकत्र कर लिया गया तथा उनके सहयोग के लिए धन्यवाद प्रेषित किया गया।

अध्ययन में सहभागी शिक्षक अपने विद्यार्थियों के साथ औपचारिक शिक्षण के लगभग पांच से छह माह सफलतापूर्वक संपूर्ण कर चुके थे तथा कक्षा विशेष के विद्यार्थियों से भली-भांति परिचित हो चुके थे।

अतः शिक्षकों के लिए अपने विद्यार्थियों के वर्तमान तथा भावी शैक्षिक सफलता एवं विफलता अथवा उनकी उपलब्धि के संदर्भ में सूचनाएँ देना सरल कार्य था, अतः हमारे द्वारा संबंधित कक्षाओं के शिक्षकों को शिक्षक अपेक्षा क्राफ्ट कार्य का समान वितरण कर उनको निर्देशानुसार पूर्ण होने के पश्चात हमारे द्वारा क्राफ्ट कार्य की वस्तुएं जो प्रयोग में लाई गई हैं उनको एकत्रित कर समस्त शिक्षकों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

चतुर्थ अध्याय

चयनित क्राफ्ट कार्य

शोधार्थी द्वारा प्राथमिक स्तर हेतु बारह क्राफ्ट कार्यों का चयन किया गया है, जिसका विवरण निम्नलिखित हैं—

4.1 Leaf Zoo

आवश्यक सामग्री—पीपल की पत्ती, फेविकोल, कैंची, एक सफेद कागज।



चित्र सूची –4.1.1



चित्र सूची– 4.1.2

प्रथम चरण—Leaf Zoo बनाने के लिए एक लंबी पीपल की पत्ती को बीच से हाथ की सहायता से सीधे तोड़ते हैं। इससे Cat की बॉडी बनाते हैं और दूसरी पत्ती को ऊपर भी आकार में हाथ की सहायता से तोड़ते हैं और पीछे की डंडी निकाल देते हैं।

द्वितीय चरण—एक सफेद कागज में फेविकोल की सहायता से हम Cat की बॉडी चिपकाएँगे इसके बाद दूसरी पत्ती जो भी V आकार की है, उसको Cat की बॉडी के आगे की ओर चिपका देते हैं। Leaf Zoo बनकर तैयार है।

ड्राई आउट—कक्षा—5, भागवत प्रसाद मेमोरियल इंटर कॉलेज, बाँदा

परिणाम– सफल।

4.2 Ice-cream Sticks Bomb

आवश्यक सामग्री—आइसक्रीम स्टिक्स, फेविकोल।



चित्र सूची –4.2.1



चित्र सूची– 4.2.2

प्रक्रिया—Ice-cream Sticks Bomb बनाने के लिए पांच आइसक्रीम स्टिक को लेते हैं। सबसे पहले हम दो स्टिक को A के आकार में फेवीकोल की सहायता से जोड़ते हैं और फिर उसके बाद तीसरी स्टिक को दोस्ती के बीच में जोड़ते हैं और फिर इसके बाद चौथे स्टिक को लेकर दो स्टिक में क्रॉसबार की तरह पीछे साइड से अटैच करते हैं। उसके बाद पांचवी को लेकर नीचे की तीनों स्टिक में जोड़ते हैं और आगे की ओर अटैच कर सेकण्ड इंटरलॉक की तरह बनाते हैं। इस प्रकार Ice-cream Sticks Bomb बनकर तैयार है।

ट्राउट आउट: कक्षा—5 भागवत प्रसाद मेमोरियल इंटर कॉलेज, बाँदा

परिणाम– सफल

4.3 No Knot Air Boloon

आवश्यक सामग्री– 5cm X 5cm एक दफ़्ती का टुकड़ा, एक गुब्बारा, धागा, कैंची।



चित्र सूची– 4.3.1



चित्र सूची– 4.3.2

No Knot Air Boloon बनाने के लिए सर्वप्रथम 5cm X 5cm की एक दफ़्ती का टुकड़ा लेंगे और उसके बाद कैंची की सहायता से उस टुकड़े के बीच में एक छोटा सा छेद करेंगे। फिर गुब्बारे को लेकर उसे मुंह की सहायता से बुलाएंगे और उसके बाद गुब्बारे के किनारे धागा बाँधकर दफ्ती के बीच में जो छेद है, उसके अंदर धागा डालकर बाहर की ओर निकालेंगे और फिर धागे में गांठ लगा देंगे। इस प्रकार No Knot Air Boloon बनकर तैयार हो गया।

ट्राई आउट: कक्षा—5, भागवत प्रसाद मेमोरियल इंटर कॉलेज, बाँदा

परिणाम—सफल

4.4 Spinner from Scrap

आवश्यक सामग्री—एक DVD, एक प्लास्टिक की बोतल, कैंची, फेविकोल, साइकिल की तिल्ली, मोती।



चित्र सूची– 4.4.1



चित्र सूची– 4.4.2

प्रक्रिया—प्रथम चरण में Spinner From Scrap बनाने के लिए सबसे पहले बोतल में कैंची की सहायता से बोतल में स्पाइरल कूट लगाएंगे, उसके बाद DVD को बीच से सीधे लाइन में काटकर उसे दो टुकड़ो में कर देंगे।

दूसरे चरण में बोतल को लेंगे और उसके कटी हुई DVD को बोतल जो स्पाइरल आकार में कटी थी उसमें दोनों तरफ लगा देंगे, उसके बाद फेविकोल की सहायता से चिपका देंगे फिर उसके बाद साइकिल की तिल्ली को बोतल के नीचे से छेद करके सीधे ऊपर की ओर निकाल लेंगे और फिर ऊपर की तिल्ली पर मोती डाल देंगे और बोतल को कलर टेप की सहायता से सुंदर और आकर्षण बना देंगे। इस प्रकार Spinner From Scrap बनकर तैयार है।

ट्राई आउट: कक्षा—4, तथागत ज्ञानस्थली सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, अतर्रा (बाँदा)

परिणाम—सफल

4.5 Bottle Planter

आवश्यक सामग्री—प्लास्टिक बोतल, कैंची, धागा।



चित्र सूची– 4.5.1



चित्र सूची– 4.5.2

प्रक्रिया—Bottle Planter बनाने के लिए सबसे पहले बोतल को ऊपर की ओर से 10 सेंटीमीटर पर काटेंगे और उसके बाद बोतल के कैप के बीच में कुछ ऐड करेंगे । और उसके बाद तीन कटी हुई बोतल में ऊपर की ओर तीन-तीन छेद करेंगे और उसके बाद तीनों कटी बोतलों में और उनके छेदों में धागा बांध लेंगे और उसके बाद कटी हुई बोतलों में मिट्टी डालेंगे और उसके बाद मिट्टी में थोड़ा पानी डालेंगे फिर उसमें छोटे-छोटे पौधे लगा देंगे इस प्रकार Bottle Planter बनकर तैयार हो गया।

ट्राई आउट: कक्षा—4, तथागत ज्ञानस्थली सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, अतर्रा (बाँदा)

परिणाम– सफल

4.6 Irrigation Ladle



चित्र सूची– 4.6.1

आवश्यक सामग्री—टी कप, रंगीन धागा, सफेदा, साइकिल की तिल्ली।



चित्र सूची– 4.6.2

प्रक्रिया—Irrigation Ladle बनाने के लिए सबसे पहले एक टी कप लेंगे और उसमें मुंह की तरफ बराबर में आमने-सामने दो छेद करेंगे और उसमें सफेद धागा बांध लेंगे और फिर उसके बाद नीचे की तरफ दो छेद करेंगे और उसमें रंगीन धागा बांध लेंगे फिर साइकिल की तिल्ली लेंगे और उसमें चारों धागों को बांध देंगे। इस प्रकार Irrigation Ladle बनकर तैयार हो गया।

ट्राई आउट: कक्षा—4, तथागत ज्ञानस्थली सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, अतर्रा (बाँदा)

परिणाम—सफल

4.7 News Paper Bag

आवश्यक सामग्री—मैगजीन पेपर स्टिक, फेविकोल, धागा, सुई।



चित्र सूची– 4.7.1



चित्र सूची– 4.7.2

प्रक्रिया—प्रथम चरण में पेपर बैग बनाने के लिए 15 मैगजीन स्टिक्स एक समान दूरी में रखकर एक तरफ से टेप लगाकर उनको मजबूती से बांध देते हैं। उसके बाद एक तरफ से आखरी स्टिक में एक स्टिक लगाकर उन 16 स्टिक के बीच एक ऊपर एक नीचे कर उसे बुनना प्रारंभ करते हैं। अंतिम स्टिक से मोड़कर दूसरी स्टिक पर ले जाते हैं। लगभग 15 सेंटीमीटर बुनने के बाद दोनों किनारे से दो स्टिक छोड़कर लगभग चार अंगुल बुनते हैं जिससे उसका ऊपर का भाग तैयार हो जाए।

द्वितीय चरण में पेपर बैग को पूरा बुनने के बाद निकली हुई स्टिक को बुनी हुई स्टिक के अंदर चिपका देते हैं। पूरा बुनने के बाद उसे मोड़कर सुई एवं धागे से दोनों किनारों को सिलते हैं। पेपर बैग तैयार है।

ट्राई आउट: कक्षा—3, सरस्वती विवेक मंदिर, बाँदा

परिणाम—सफल

4.8 News Paper Wall Hanging

आवश्यक सामग्री—पेपर स्टिक, कार्ड बोर्ड, फेविकोल, पेपर, कटर, रंग।



चित्र सूची– 4.8.1



चित्र सूची– 4.8.2

प्रक्रिया—प्रथम चरण में वाल हैंगिंग बनाने के लिए सबसे पहले पेपर स्टिक से कुछ बड़े कुछ छोटे विभिन्न आकार के घेरे बनाते हैं जिसमें से तीन घेरे सामान्यतः बड़े होते हैं जो केंद्र में रखे जाते हैं अन्य घेरे बड़े से छोटे क्रम में रखे जाते हैं। अब इन विभिन्न आकार के घेरों को कार्ड बोर्ड पर व्यवस्थित क्रम में रखकर चिपकाते हैं। द्वितीय चरण में कार्ड बोर्ड पर चिपकाने के बाद उसे पेपर कटर से किनारे से काटते हैं। फेविकोल से पेंट करते हैं। सूखने के बाद रंग देते हैं। वॉल हैंगिंग तैयार है।

ट्राई आउट: कक्षा—3, सरस्वती विवेक मंदिर, बाँदा

परिणाम—सफल

4.9 News Paper Photo Frame

आवश्यक सामग्री—कार्ड बोर्ड, पेपर स्टिक, पेपर कटर, फेविकोल, कैंची, रंग पारदर्शी शीट।



चित्र सूची– 4.9.1



चित्र सूची– 4.9.2

प्रक्रिया—प्रथम चरण फोटो फ्रेम बनाने के लिए 6 इंच चौड़ाई तथा 7 इंच लंबाई के आयताकार कार्ड बोर्ड को दो इंच चारों तरफ से छोड़कर एक चौकोर फ्रेम निकाल लेते हैं तथा बीच के भाग को अलग कर लेते हैं। अब फ्रेम बनाने के लिए पतली पेपर स्टिक को लंबाई के दोनों सिरों पर एक दूसरे से सटाकर चिपकाते हैं। इसी प्रकार से चौड़ाई की तरफ से स्टिक चिपकाकर चारों तरफ पेपर स्टिक चिपकाते हैं। द्वितीय चरण में पटरी की सहायता से लंबाई के दोनों सिरों पर तिरछा निशान लगाते हैं और कैंची की सहायता से बाहर निकली पेपर स्टिक को एक आकार देते हैं। फ्रेम स्टैंड बनाने के लिए कार्ड बोर्ड की पतली पट्टी को अलग किए हुए कार्ड बोर्ड के बीचो बीच चिपकाते हैं। इच्छानुसार रंगों का प्रयोग कर आकर्षण बना देते हैं। कांच के स्थान पर पारदर्शी शीट चिपका देते हैं। फोटो फ्रेम तैयार है।

ट्राई आउट: कक्षा—3, सरस्वती विवेक मंदिर, बाँदा

परिणाम—सफल

4.10 News Paper Basket



चित्र सूची– 4.10.1

आवश्यक सामग्री—पेपर स्टिक, नेल पॉलिश का ढक्कन, फेविकोल, रंग।



चित्र सूची– 4.10.2

प्रथम चरण—न्यूज़ पेपर बास्केट बनाने के लिए सबसे पहले नेल पॉलिश के ढक्कन पर पेपर स्टिक से गोल छल्ले बना लेते हैं तथा छल्लो की संख्या के बराबर ही छोटे घेरे बनाते हैं जो छल्लो के बीच में आसानी से आ जाए। इस प्रकार से 20-25 घेरे बनाते हैं।

द्वितीय चरण—बास्केट बनाने के लिए सबसे पहले आधार बनाते हैं जिसके लिए स्टिक से गोल घेरा बनाते हैं। अब इस आधार के ऊपर छल्ले में लगे हुए छोटे घेरे चिपकाते हैं तथा उसके ऊपर फिर एक घेरा पूर्ण करते हैं। छक्कन बनाने के लिए स्टिक से बास्केट के ऊपरी भाग के ऊपरी भाग के बराबर गोल घेरा बनाते हैं इसके पश्चात घेरे को अन्दर की तरफ से बाहर की ओर निकालते हुए थोड़ा उभरा हुआ आकार देते हैं। ढक्कन के ऊपर एक छोटा घेरा पकड़ने के लिए रख देते हैं। इच्छानुसार रंग देते है।

ट्राई आउट: कक्षा—4, विद्यावती निगम सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, बाँदा

परिणाम—सफल

4.11 News Paper Flower Vas

आवश्यक सामग्री—पेपर स्टिक, पतली दफ्ती/शादी कार्ड, फेवीकोल, पटरी, कैंची।



चित्र सूची– 4.11.1



चित्र सूची– 4.11.2

प्रक्रिया—फ्लावर वास बनाने के लिए शादी कार्ड (12 इंच लंबाई 10 इंच चौड़ाई) पर फेविकोल की सहायता से सटाकर स्टिक लगाते हैं। सूखने के बाद उसमें चौड़ाई की तरफ 10 इंच तथा दूसरी तरफ 8.30 इंच निशान लगाकर दोनों निशान को मिला देते हैं। फिर कैंची से तिरछा काट देते हैं। इच्छानुसार रंग देते हैं। फ्लावर वास तैयार है।

ट्राई आउट: कक्षा—4, विद्यावती निगम सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, बाँदा

परिणाम—सफल

4.12 News Paper Pen Stand

आवश्यक सामग्री—न्यूज़ पेपर बॉल, कार्ड बोर्ड, फेविकोल, रंग।



चित्र सूची– 4.12.1



चित्र सूची– 4.12.2

प्रक्रिया—न्यूज़ पेपर के छोटे वर्गाकार टुकड़े कर लेते हैं। टुकड़ों पर फेवीकोल लगाकर उनकी छोटी-छोटी गोलियाँ बना लेते हैं। अब कार्ड बोर्ड पर प्रकार से छोटा वृत्त बनाते हैं। उसे पेपर से कवर करते हैं। अब वृत्त के ऊपर समान दूरी पर गोलियां रखते हैं । इस प्रकार एक घेरा के ऊपर घेरे बनाते हुए एक सामान्य आकार देते हैं। इसके बाद फेविकोल से पेंट कर देते हैं। सूखने के बाद इच्छानुसार रंग कर देते हैं। पेन स्टैंड तैयार है।

ट्राई आउट: कक्षा—3, विद्यावती निगम सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, बाँदा

परिणाम—सफल

पञ्चम अध्याय

पाठ्यक्रम में क्राफ्ट-कार्य

5.1 क्राफ्ट कार्य का पाठ्यक्रम में स्थान

शिक्षा बालक एवं बालिका को संपूर्ण जीवन के लिए तैयार करती है लेकिन परंपरागत शिक्षा संस्थानों में दी जाने वाली शिक्षा सभ्य जीविकोपार्जन के लिए पूर्ण नहीं है। सामान्य शिक्षा इस उद्देश्य के लिए अपूर्ण है। अतः +2 के स्तर से ही युवाओं को विविधतायुक्त पाठ्यक्रम की शिक्षा देने का सुझाव दिया जाता है।

Nation Review Committee के अनुसार संपूर्ण शिक्षा समय का 50% व्यावहारिक कार्य (Practical works) में किया जाना चाहिए। विशेष ध्यान स्व-नियोजन पर दिया जाना चाहिए।

ईश्वर भाई पटेल समिति के अनुसार कक्षा 1 से 5 तक संपूर्ण विद्यालय पाठ्यक्रम का लगभग 20% क्राफ्ट कार्य में व्यय किया जाना चाहिए। N.C.E.R.T. के प्रसिद्ध दस्तावेज, प्राथमिक शिक्षा हेतु क्राफ्ट कार्य पाठ्यक्रम 1से 5 तक विद्यालयों में 8 कलांशों में से 45 मिनट का समय क्राफ्ट कार्यों को दिया जाना चाहिए। खाली कालांश के बेहतर उपयोग के लिए इनका आयोजन किया जा सकता है।

एन.सी.ई.आर.टी का दस्तावेज **"क्राफ्ट कार्य"** आदर्श पाठ्यक्रम इकाई (1979) के अनुसार विद्यालय की संपूर्ण कार्य अवधि में कम से कम 15 मिनट समुदाय कार्यों पर व्यय किया जाना चाहिए। एक दो खाली कालांशों को एक कर इनका कार्यान्वयन किया जा सकता है।

5.2 क्राफ्ट कार्य का प्राथमिक शिक्षा में क्रियान्वयन

वर्तमान में विद्यालय शिक्षा से ज्ञान के साथ-साथ कौशल विकास होना भी आवश्यक है प्राथमिक स्तर में क्राफ्ट कार्य कार्यक्रम आवश्यक है। प्राथमिक विद्यालयों में क्रियाकलापों का आयोजन कराया जाए। परंतु यह बात विचारणीय है कि कोई भी मुख्य अध्यापक शिक्षा के एवं शैक्षिक प्रशासन क्राफ्ट कार्यों की सूची का अंधानुकरण नहीं करेंगे। अतः यह वांछनीय है कि इस योजना के संबंध में शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं मानिटरों से विचार-विमर्श किया जाए।

समुदाय में स्थित पंचायत, राजनैतिक एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं, सरकारी अफसरों, स्वायत्तशासी संगठनों से वार्तालाप किया जाए क्राफ्ट कार्य से संबंधित क्रियाकलापों का आयोजन करने से पूर्व शिक्षकों को तीन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

प्रथम—विद्यालय में उपलब्ध आर्थिक संसाधनों के अनुसार क्रियाकलापों का आयोजन करना।

द्वितीय—कार्यकारी स्टाफ के अतिरिक्त कोई अन्य शिक्षक की उपस्थिति अनिवार्य नहीं।

तृतीय—क्राफ्ट का कार्यक्रम स्थानीय आवश्यकताओं पर आधारित होना चाहिए। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विभिन्न विद्यालयों में पढ़ने वाले बालक बालिकाओं के लिए प्रथक-प्रथक क्रियाकलापों का आयोजन भी किया जाना चाहिए। वातावरण के अनुसार शिक्षकों को यह समझना आवश्यक है कि कौन से क्रियाकलाप अनिवार्य है, कौन से होने चाहिए एवं कौन से क्रियाकलाप हो सकते हैं?

ध्यान देने योग्य बातें

ध्यान देने योग्य बातें निम्नलिखित हैं—

1. विद्यार्थियों के विकास के स्तर को ध्यान में रखकर कार्य होना चाहिए।
2. विकासात्मक आवश्यकता का संपूर्ण ध्यान रखने वाली होना चाहिए।
3. समस्या समाधान कौशल एवं सृजनात्मकता से सम्मिलित नियोजित उपक्रम तथा मूल्य निर्माण में सहायक होनी चाहिए।
4. विद्यार्थियों को प्रसांगिक ज्ञान एवं कौशल देने में सहायता करने वाले होना चाहिए।
5. संबंधित क्रियाकलाप उत्पादन होना चाहिए तथा उसका परिणाम विद्यार्थी समुदाय तथा विद्यालय के लिए प्रत्यक्ष रूप से उपयोगी हो तथा विक्रय योग्य हो।
6. सेवाओं में सामाजिक तथा आर्थिक मूल्यों का समावेश हो, क्रियाकलाप समुदाय तथा व्यक्तिगत आवश्यकता का परस्पर ध्यान रखने वाली होना चाहिए।
7. विद्यार्थियों के रूचि के अनुरूप होना चाहिए।
8. विद्यार्थियों को क्राफ्ट कार्य का सामान आसानी से प्राप्त हो सके।
9. आत्मानुभूति की प्रक्रिया में मदद करने वाली होना चाहिए।

5.3 विद्यालयों में क्राफ्ट कार्य का मूल्यांकन

क्राफ्ट कार्य क्रियाकलापों का विद्यालय में मूल्यांकन करते समय निम्नलिखित बिंदुओं का ध्यान रखना आवश्यक है—

- विद्यार्थियों की आयु।
- कक्षा का स्तर।
- विद्यालय का आकार।
- विद्यालय का तत्कालिक वातावरण।
- शिक्षण अधिगम बेहतर बनाने के लिए पर्याप्त समय अंतराल पर सदस्यों द्वारा क्रियाकलापों का मूल्यांकन किया जाए जिससे अवरोधों को दूर किया जा सके।
- जितना संभव हो सके क्रियाकलापों का मूल्यांकन उसी शिक्षक के द्वारा किया जाए जो कक्षा-कक्ष में क्रियाकलापों को आयोजित करते हैं।
- एक त्रिबिंदु मापनी जैसे उत्कृष्ट, अच्छा, संतोषजनक अथवा 5 बिंदु मापनी जैसे उत्कृष्ट, अच्छा, संतोषजनक, निम्न, अतिनिम्न के आधार पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए।
- आकलन अन्य विषयों के समान लिखित रूप में न स्वीकार कर, बल्कि समझ तथा कार्य की निष्पत्ति के आधार पर किया जाए।

षष्ठ अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

6.1 निष्कर्ष

शिक्षा वही है, जो सर्वांगीण विकास में सहयोग दे। अर्थात शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, आध्यात्मिक एवं कौशल का विकास करे। यह विचारणीय है कि क्या वर्तमान शिक्षा प्रणाली इन विभिन्न पक्षों का संतुलित विकास करती है या केवल एक पक्ष का?

प्रस्तुत अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उजागर हुए—

1- क्राफ्ट कार्य की अवधारणा विस्तृत है, जान डी. बी. ने विद्यार्थियों में क्राफ्ट कौशल के विकास पर बल दिया। बच्चे समाज से निकलकर विद्यालयों में जाते है तथा पुनः विद्यालयों से निकलकर समाज के जिम्मेदार नागरिक के रूप में संस्कृति को सुरक्षित रखते हैं, तथासंभव परिमार्जन करते हैं तथा भावी पीढ़ी को हस्तांतरित करते हैं। अतः विद्यालयों से अपेक्षा की जाती है कि वे विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए उन्हें क्राफ्ट कार्य के समुचित अवसर उपलब्ध कराएँ।

2- वर्तमान शिक्षा प्रणाली ज्ञानात्मक पक्ष पर अधिक बल देती है। भावात्मक एवं कौशलात्मक लक्ष्य उपेक्षित स्थिति में है।

3- विद्यालय पाठ्यचर्या में सह-पाठ्यगामी क्रियाओं के आयोजन के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोंण उदासीनतापूर्ण है।

4- विद्यालयी पाठ्यक्रम में सम्मिलित नैतिक खेल एवं शारीरिक शिक्षा तथा आलेखन कला में क्राफ्ट कार्य की विषय वस्तु व्यावहारिक नहीं है।

5- शिक्षकों का सम्पूर्ण ध्यान विषय आधारित शिक्षा देने के प्रति रहता है। विद्यार्थियों की आंतरिक प्रतिभाओं को उभारने के प्रयास नगण्य है।

6- अनुदानित विद्यालयों की स्थिति, निजी विद्यालयों की अपेक्षा अधिक दयनीय है। वहाँ का शिक्षण-अधिगम वातावरण अप्रभावी एवं निम्न है, शिक्षकों में शिक्षण कौशल तथा शिक्षण प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए किए जाने वाले प्रयास श्रेयस्कर नहीं हैं।

6.2 अध्ययन के सुझाव

1- प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में क्राफ्ट कार्य से सम्बन्धित क्रियाकलापों का स्थान दिया जाना चाहिए।

2- विद्यालयों में क्राफ्ट कार्य के विशिष्ट आयामों से सम्बन्धित अतिरिक्त पाठ्यपुस्तकों को सम्मिलित किया जाना चाहिए ।

3- छात्र-छात्राओं हेतु कौशलात्मक क्रियाकलापों की व्यवस्था की जानी चाहिए।

4- विद्यार्थियों द्वारा निर्मित क्राफ्ट कार्य से सम्बन्धित वस्तुओं का विद्यालय मेले में प्रदर्शन किया जाना चाहिए, जिससे उनमें आत्मविश्वास तथा अन्य विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा का संचार हो सके।

5- विद्यार्थिओं से रचनात्मक कार्यों के अन्तर्गत अनुपयोगी वस्तुओं से नवीन उपयोगी वस्तुओं का निर्माण कराना चाहिए।

6- विद्यार्थियों द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों को पुरस्कृत कर उनकी प्रतिभा को सम्मानित करना चाहिए।

7- विद्यालय द्वारा समय-समय पर क्राफ्ट कार्य के विशिष्ट क्षेत्रों से सम्बन्धित कार्यशाला का आयोजन किया जाना चाहिए।

8- विद्यार्थिओं को क्राफ्ट कार्य के विभिन्न आयामों में दक्षता प्राप्त कर, उन्हें जीविकोपार्जन के साधन अपनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

9- क्राफ्ट कार्य के द्वारा बच्चों में खोज तथा प्रयोग करने के अधिकाधिक अवसर देकर उनमें नवीन रुचियाँ जागृत की जानी चाहिए।

10- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को बेहतर और प्रभावी बनाने के लिए सप्ताह में 2 दिन जैसे गुरुवार एवं शनिवार को विभिन्न क्राफ्ट क्रियाकलापों का आयोजन किया जाना चाहिए।

11- शिक्षकों को क्राफ्ट कार्य से सम्बन्धित स्वंम के उदाहरण प्रस्तुत करने चाहिए। लघु शोध-प्रबंध में उल्लेखित 12–क्राफ्ट कार्य प्रयोगों को प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम में लागू किया जाना चाहिए।

6.3 शैक्षिक उपादेयता

जीवन में संतुलन आवश्यक है तथा संतुलित जीवन के लिए कला पक्ष का विकास होना आवश्यक है। प्रत्येक विद्यार्थी अपने आप में अद्वितीय है तथा प्रतिभा संपन्न है। यह परिवार, शिक्षकों एवं समाज की जिम्मेदारी है कि उन्हें बेहतर अवसर उपलब्ध कराएँ ताकि उनकी प्रतिभा का विकास हो सके तथा उनके गुणों से समाज लाभान्वित हो सके। विद्यालय को विद्यार्थी की निर्माणशाला माना जाता है तथा शिक्षकों को निर्माता। अतः परिवार एवं समाज की दृष्टि विद्यालयों पर रहती है। विद्यालय का कक्षा-कक्ष विभिन्नता युक्त संक्षिप्त समाज है जिसमें सभी विद्यार्थियों को एक समान शिक्षा प्रणाली के साथ-साथ यह आवश्यक है कि व्यक्तिगत विभिन्नता का ध्यान रखते हुए कुछ क्राफ्ट कार्य से सम्बन्धित क्रियाकलापों का आयोजन किया जाए।

कक्षा में विद्यार्थियों के समूह बनाए जाएँ तथा उन्हें रुचि एवं योग्यता के अनुसार छोटे-छोटे कार्य सौंपे जाएँ जैसे- वृक्षारोपण, विद्यालय स्वच्छता कार्यक्रम, पेपर एवं गत्ते से नवीन वस्त्र निर्माण, अनुपयोगी वस्तुओं का पुनर्चक्रण एवं उपयोगी तथा गुणात्मक प्रतियोगिताओं का आयोजन आदि। ऐसे विभिन्न क्रियाकलाप विद्यार्थियों में विद्यालय के प्रति आकर्षण को बढ़ाते हैं तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को रुचिकर एवं मनोरंजनात्मक बनाते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में ऐसे ही कुछ उपयोगी एवं मनोरंजनात्मक क्राफ्ट कार्यों का समावेश किया गया है जो एक तरफ कक्षा-कक्ष के बोझिल वातावरण को रुचिपूर्ण बनाते हैं दूसरी तरफ़ कार्य को गुणात्मक एवं उपयोगी बनाते हैं तथा कार्य कौशलों का विकास करते हैं। विद्यालय पाठ्यचर्या में इन क्रियाकलापों के समावेश से विद्यार्थियों में सामंजस्य, सामूहिकता, सहयोग, सौहार्द एवं मैत्री की भावना का विकास होगा साथ ही विद्यार्थियों में पुन: चक्रण, पुनः निर्माण तथा पुन:उपयोग की अवधारणा के प्रति समझ विकसित होगी।

विद्यालय के पाठ्यक्रम में प्रचलित **नैतिक खेल एवं शारीरिक शिक्षा** तथा **आलेखन कला** की पाठ्य पुस्तकों में शारीरिक अभ्यास, चित्रकला एवं आलेखन कला के ज्ञान के साथ-साथ अत्यंत सामान्य क्रियाकलापों का समावेश है, जिनके अनुपालन में न तो विद्यालय तत्पर है और न ही विद्यार्थी।

अतः आवश्यकता है कि पाठ्यक्रम में कुछ नवीन रुचि पूर्ण एवं उपयोगी क्रियाकलापों का समावेश किया जाए।

प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम में क्राफ्ट कार्य से संबंधित कुछ नवीन क्रियाकलापों के समावेशन हेतु सुझाव दिया गया है, जो इस प्रकार हैं—

1. कक्षा-कक्ष की मेज कुर्सी के साथ-साथ चारों तरफ स्वच्छता रखना।
2. विद्यालय परिसर में पेड़ों से गिरी हुई पत्तियों को खाद के गड्ढे में डालना।
3. मिट्टी से प्रतिमान निर्माण।
4. पेपर को मोड़ना एवं हस्तशिल्प कार्य।
5. पेपर को विभिन्न प्रकार से ज्यामितीय आकार देने के लिए पेन, चाकू, पेंसिल, कटर एवं कैंची का उपयोग करना।
6. किताबों में जिल्द चढ़ाना।
7. वृक्षारोपण

6.4 भावी शोध हेतु सुझाव

समय एवं साधनों के अभाव में प्रस्तुत अध्ययन को सीमित कर दिया है अन्यथा हर विषयवस्तु एवं समस्या अपने आप में विस्तृत है। शोधार्थी ने समस्या के समाधान हेतु सीमित पहलुओं पर दृष्टिपात किया है, जिसके परिणामस्वरूप कई अन्य उपयोगी पहलुओं अध्ययन के प्रभाव क्षेत्र से अछूते रह गए। यह विश्वास किया जाता है कि भविष्य में इस क्षेत्र में अध्ययन करने वाले शोधार्थी उन पहलुओं को अपने अध्ययन में अवश्य शामिल करेंगे। उनके द्वारा दिया गया अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में दूरगामी परिणामों के साथ एक नवीन संकल्पना के रूप में उजागर होगा।

भावी शोधार्थियों से आशा की जाती है कि वह भविष्य में अपने अध्ययन में निम्नलिखित क्षेत्रों को शामिल करेंगे—

1- प्रस्तुत अध्ययन बाँदा जनपद के चार विद्यालयों तक सीमित है भावी शोध में अन्य जनपदों को सम्मिलित किया जा सकता है।

2- प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत बालक और बालिकाओं को कराए गए 12–क्रियाकलापों तक सीमित है भावी शोध में अन्य क्राफ्ट क्रियाकलापों को सम्मिलित किया जा सकता है।

3- प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में प्राथमिक स्तर के बालक और बालिकाओं को लिया गया है, भावी शोध में उच्च प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर एवं उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

4- प्रस्तुत अध्ययन क्राफ्ट कार्य के क्षेत्रों में से एक क्षेत्र पुनर्निर्माण पर आधारित है। भावी शोधार्थी इसके अन्य क्षेत्रों को भी अध्ययन में शामिल कर सकते हैं।

5- प्रस्तुत अध्ययन कागज, पेपर एवं पत्तियों आदि से निर्मित क्राफ्ट कार्य के निर्माण तक सीमित है। भविष्य के शोधार्थी इसमें जूट, सरकण्डा अन्य अनुपयोगी वस्तुओं से निर्मित क्राफ्ट कार्य को शामिल कर सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अग्रवाल, जे.सी. (2011)। *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा।* आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन।

आधुनिक भारत में शिक्षा की समस्याएँ और उनका निदान (2021, June 30)। Parents Assembly. <http://www.parentsassembly.com/problems-and-solutions-of-education-in-modern-india/>

कुशवाहा, ज्ञानवती (2019)। *प्राथमिक शिक्षा में क्राफ्ट कार्य: वर्तमान परिदृश्य एवं भावी सम्भावनाएँ।* एम०एड० लघु शोध-प्रबंध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

गुप्ता, प्रियंका (2020)। *शिक्षा में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं आधुनिक प्रवृत्तियाँ।* एम०एड० लघु शोध-प्रबंध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। <https://archive.org/details/ilovepdf_merged_20210626>

प्रयोगात्मक विधि का अर्थ, परिभाषा एवं गुण दोष। (2020, February 02)। Kailash Education. <https://www.kailasheducation.com/2020/02/prayogatmak-vidhi-arth-paribhasha-gun-dosh.html>

पाण्डेय, रामशकल (2012)। *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा,* आगरा: अग्रवाल प्रकाशन। <https://academic.pustak.org/index.php/books/authorbooks/Ramshakal%20Pandey>

शिक्षा (Education)—शिक्षा क्या है? अर्थ एवं परिभाषा। (2021, August 17)। My Coaching <https://mycoaching.in/shiksha>

समाज में शिक्षा का महत्त्व एवं उद्देश्य। (2017, August 28)। Parents Assembly. <http://www.parentsassembly.com/purpose-of-education-in-society/>

सिंह, रामपाल एवं शर्मा, ओ०पी० (2004)। *शैक्षिक अनुसंधान एवं साख्यिकी।* आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।

Chaudhary, Anamika (2019). *Traditional Art and Craft of Sub Himalayan Darjeeling Historical Study.* Ph.D. Thesis, North Bengal University, North Bengal. <http://hdl.handle.net/10603/324448>

Kothari, D.S. (1966). *Education and national development report of Education commission*. Delhi: Manager of Publication. <shorturl.at/hmqx2>

National Policy on Education, 1968 (n.d.). Education. Retrieved June 12, 2022, From <https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/document-reports/NPE-1968.pdf>

National Policy of Education, 1986 (n.d.). Education. Retrieved June 12, 2022, From <https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/upload_document/npe.pdf>

Parth, Pratima Sikdar (2016). *Pedagogical import of Art and Craft.* Ph.D. Thesis, Visva Bharti University, Santiniketan. <http://hdl.handle.net/10603/235581>

Saxena, Priya (2012). *Development of Art and Craft From 1000 BC To 600 BC* Ph.D. Thesis, M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly. <http://hdl.handle.net/10603/325733>

परिशिष्ट—I

अतर्रा नगर के मान्यता प्राप्त प्राथमिक विद्यालय

सरकारी

1. प्राथमिक विद्यालय, बबेरू रोड, अतर्रा
2. प्राथमिक विद्यालय, गया प्रसाद का पुरवाम, अतर्रा ग्रामीण
3. प्राथमिक विद्यालय, अत्री नगर, अतर्रा
4. प्राथमिक विद्यालय, शारदा नगर, अतर्रा

अनुदानित

1. आदर्श बाल निकेतन स्कूल, अतर्रा
2. महात्मा गाँधी पूर्व माध्मिक विद्यालय, अतर्रा

निजी

1. **तथागत ज्ञानस्थली सी.से. स्कूल, अतर्रा**
2. नेहरु कान्वेंट स्कूल, अतर्रा
3. तुलसी फ्लावर गार्डेन स्कूल, अतर्रा
4. लक्ष्मी बाई मेमोरियल स्कूल, अतर्रा
5. शान्ती धाम स्कूल, अतर्रा
6. New Convent Boys School, Atarra

परिशिष्ट—II

बाँदा नगर के मान्यता प्राप्त प्राथमिक विद्यालय

सरकारी

1. प्राथमिक विद्यायल, लड़ाका पुरवा, बाँदा
2. प्राथमिक विद्यालय, बंगाली पूरा, बाँदा
3. प्राथमिक विद्यालय, खुटला, बाँदा
4. प्राथमिक विद्यालय, पुलिस लाइन, बाँदा
5. प्राथमिक विद्यालय, बिजली खेरा, बाँदा

अनुदानित

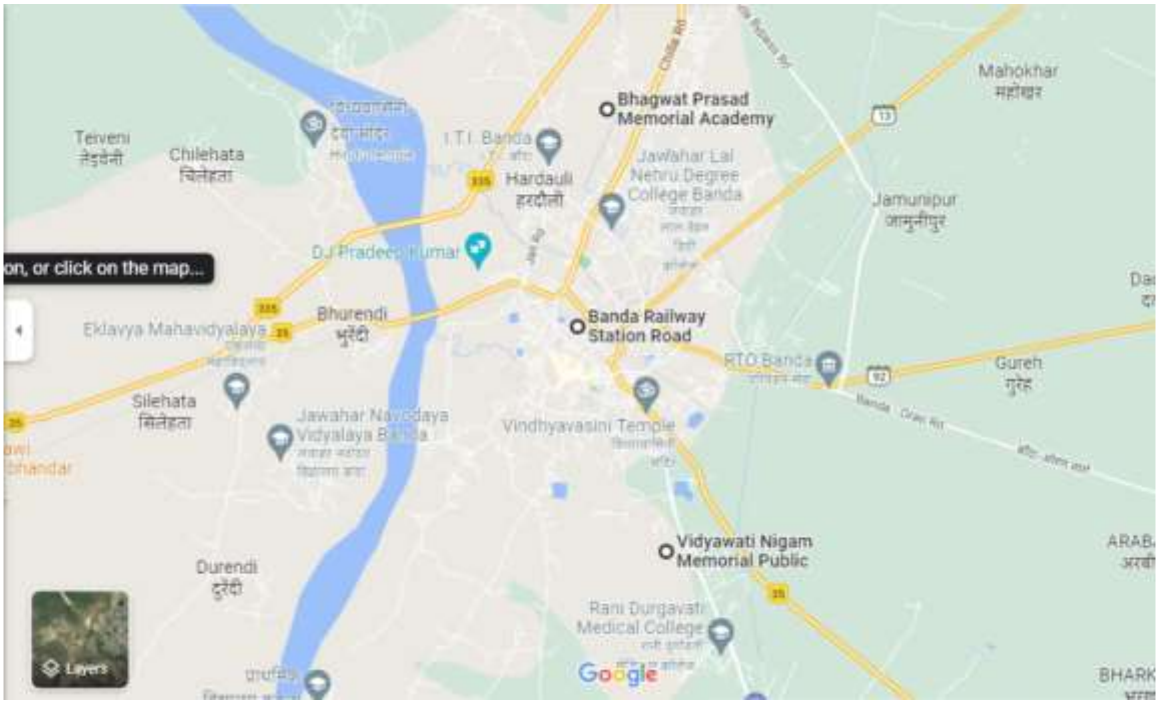
1. **सरस्वती विवेक मंदिर, बाँदा**
2. सिटी मोंटेसरी स्कूल, बाँदा

निजी

1. **विद्यावती निगम सी.से. स्कूल, बाँदा**
2. **भागवत प्रसाद मेमोरियल इण्टर कॉलेज, बाँदा**
3. सन्त तुलसी पब्लिक स्कूल, बाँदा
4. सेंट मरी सी.से. स्कूल, बाँदा
5. श्री गुरुराम राय पब्लिक स्कूल, बाँदा
6. सेंट जार्ज स्कूल, बाँदा
7. सेंट जेवियर स्कूल, बाँदा

परिशिष्ट—III

क्राफ्ट कार्य हेतु बाँदा के चयनित विद्यालयों के Google map का Screenshot



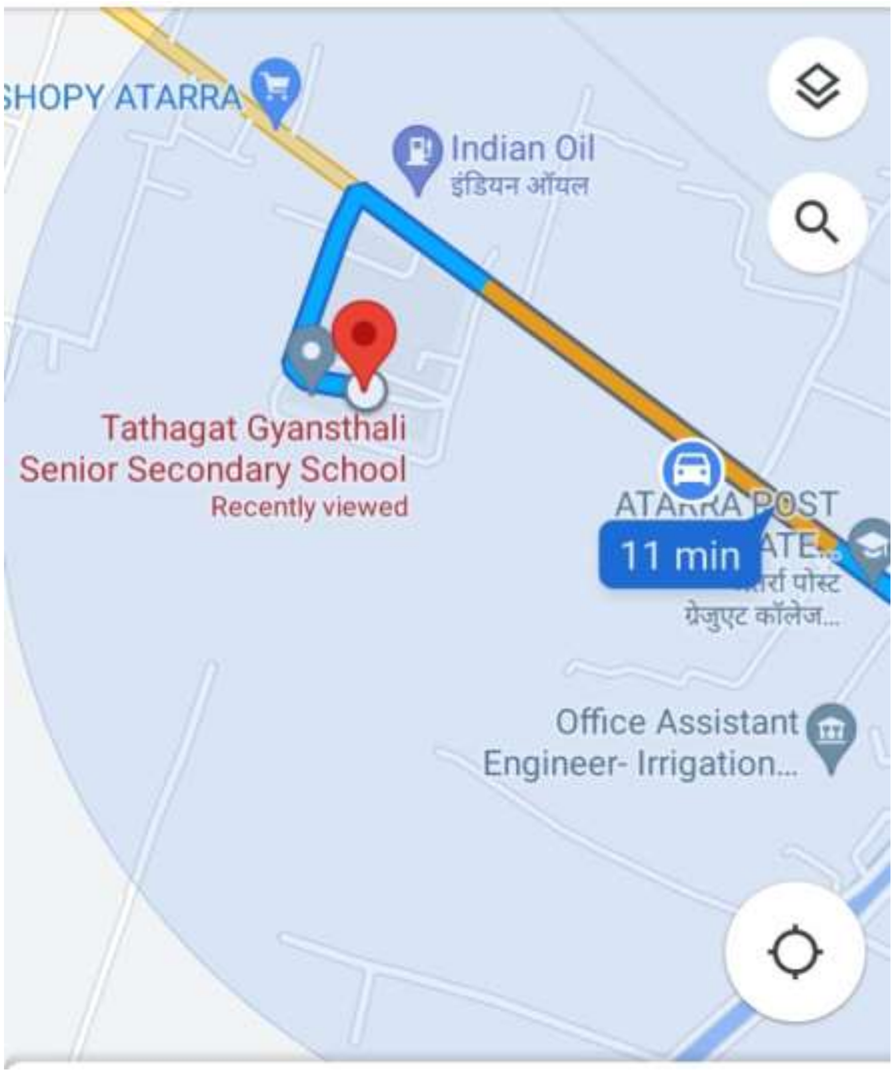
परिशिष्ट—IV

क्राफ्ट कार्य हेतु अतर्रा के चयनित विद्यालयों के Google map का Screenshot

Google Maps
Find local businesses, view maps and get driving directions in Google Maps.
maps.app.goo.gl

Tathagat Gyansthali Senior Secondary School
094523 14950

<https://maps.app.goo.gl/SWmvFPjfeB69zNWu9>



प्राथमिक शिक्षा में क्राफ्ट कार्य की प्रभावशीलता का अध्ययन



क्राफ्ट (शिल्प) शिक्षा छात्रों को दृश्य सामग्री व जानकारी को समझने, आलोचना करने और उसे प्रयोग करके सही निर्णय लेने में सहायक होती है और छात्रों को अधिक चतुर बनाती है।

ISBN 978-93-5906-301-0

9 789359 063010